चन्दामामा
अप्रैल १९७०
75 P

अप्रैल १९७०

★

विषय - सूची

★

एक प्रति ०-७५ पैसे

वार्षिक चन्दा रु. ९-००

भारत में पहलीबार
बालकों को नया उपहार

रोचक, रंग-बिरंगी, संग्रहणीय पुस्तकें
अपने बच्चों को पढ़ने को दीजिए
ये मनमोहक पुस्तकें केवल बच्चों का ही नहीं,
बड़े बूढ़ों का भी मनोरंजन करती हैं।

ज्ञान भारती
बाल पॉकेट बुक्स

प्रथम सेट

१. तेनालीराम के लतीफ़े
२. जंगल का आदमी
३. सम्राट की कहानी
४. गया चला गंधर्व नगर को
५. पुतली कथा
६. एक था राजा

द्वितीय सेट

१. कोड़े की करामात
२. चाँदज़ादी
३. तेनालीराम के नये लतीफ़े
४. पाताल लोक की यात्रा
५. कुबड़े की कहानी
६. दैत्य की बेटी

ये पुस्तकें अपने पुस्तक विक्रेता या अख़बार वाले से ख़रीदिये।
अथवा
ज्ञानभारती 'घरेलू बाल पुस्तकालय योजना' के सदस्य बनिये और घर बैठे बिना डाकखर्च के प्रति दूसरेमास छह पुस्तकें प्राप्त करिये तथा प्लास्टिक कवर, डायरी आदि अनेक उपहार मुफ़्त प्राप्त करिये।

विस्तृत रंग-बिरंगा विवरण
तथा 'ज्ञानभारती' पत्रिका
मुफ़्त मंगाइये

पुस्तक-विक्रेता तथा न्यूज़एजेन्ट सम्पर्क स्थापित करें।

प्रत्येक का मूल्य 1/-रु.

ज्ञानभारती बाल पुस्तकालय योजना
विशेश्वरनाथ रोड, लखनऊ (उ० प्र०)

KRISHNA

यह रहा बिनाका शॉर्ट हैंड

जिसकी विशेषता है

बिनाका शॉर्ट हैंड के बालों की गोल बनाई गई नोकें आपके मसूड़ों को छिलने से बचाती हैं।

बिनाका टूथब्रश सिर्फ टूथब्रश ही नहीं कुछ और भी है।

Binaca®

ULKA-CTB-65 HIN

लाखों दीवानें

दीवाना

पढ़ते हैं - आप भी पढ़िये

दीवानगी से भरपूर रंगीन साप्ताहिक — मनोरंजन टैक्स केवल ५० पैसे

एजेन्ट एजेन्सी के लिए लिखें— सरकुलेशन मैनेजर, दीवाना तेज साप्ताहिक, पो० बा० १११२ दिल्ली-६

पेपरमिंट के मज़ेदार ज़ायके वाला
चिक्लेटस
चूइंग गम

PEPPERMINT ADAMS Chiclets 12 PIECES

६० पैसे में १२

१० पैसे में २

एडम्स का श्रेष्ठ उत्पादन

WH 9760

सिग्नल २४ घंटे आप के दांतों की सुरक्षा करता है

सिग्नल की लाल धारियों में हैक्साक्लोरोफ़ीन है, जो सड़न पैदा करने वाले कीटाणुओं को दूर करता है।
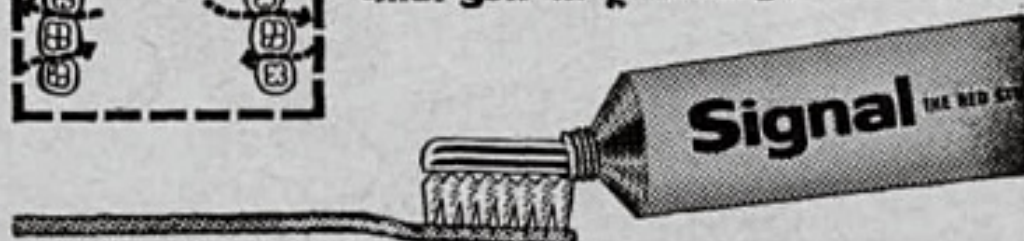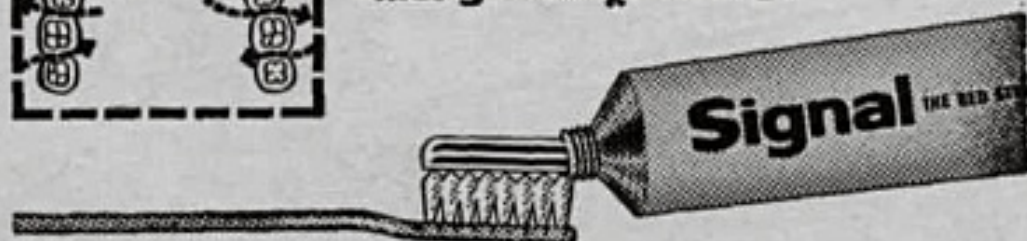
लिंटास-SG.25-77 HI

हिंदुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

चन्दामामा के ग्राहकों को सूचना

यदि आप अपना पता बदल रहे हों, तो पाँचवीं तारीख से पहिले ही अपनी ग्राहक-संख्या के साथ, अपना नया पता सूचित कीजिये। यदि विलम्ब किया गया, तो अगले मास तक हम नये पते पर 'चन्दामामा' न भेज सकेंगे।

आपके सहयोग की आशा है।

डाल्टन एजन्सीस, मद्रास - २६

चन्दामामा के ग्राहकों को सूचना

यदि आप अपना पता बदल रहे हों, तो पाँचवीं तारीख से पहिले ही अपनी ग्राहक-संख्या के साथ, अपना नया पता सूचित कीजिये। यदि विलम्ब किया गया, तो अगले मास तक हम नये पते पर 'चन्दामामा' न भेज सकेंगे।

आपके सहयोग की आशा है।

डाल्टन एजन्सीस, मद्रास - २६

चन्दामामा
संचालक: चक्रपाणी
इस महीने की बेताल कथा "दिली दोस्त" में एक असाधारण सत्य का उद्घाटन हुआ है। हम चाहते हैं कि स्नेह, प्रेम, वात्सल्य इत्यादि भाव आदर्शमय हों, लेकिन वे भाव वास्तविक जीवन में बहुत समय तक ठहर नहीं पाते। मित्रों के बीच, पति-पत्नी तथा पिता-पुत्र के बीच में भी कुछ समय तक ये संबंध बहुत ही आदर्शपूर्ण रहते हैं, मगर धीरे-धीरे बिगड़कर पूर्ण रूप से टूट भी जाते हैं। इस कहानी में उन्हीं कारणों पर प्रकाश डाला गया है।
वर्ष: २१ अप्रैल १९७० अंक: ८
CHITRA

शिक्षा का दान

एक छोटे से गाँव में विष्णुशर्मा नामक एक पंडित था। उस गाँव के क़रीब सब लोग काला अक्षर भैंस बराबर थे। विष्णुशर्मा ने सोचा कि सारे गाँव के लोगों को शिक्षा देनी चाहिये। यह सोचकर उसने अपने घर पर पाठशाला खोली। जो भी पढ़ने को आया, उसे दिल लगाकर पढ़ाने लगा। सब कोई थोड़ी बहुत दक्षिणा देने लगे। गरीब विद्यार्थियों को खाना-कपड़ा भी देकर विष्णुशर्मा पढ़ाया करता था।

एक बार उस गाँव में परमानंद नामक एक महा पंडित आया। वह कई राजा और महाराजाओं से सम्मान भी पा चुका था। विष्णुशर्मा द्वारा चलाये जानेवाले गुरुकुल का समाचार सुनकर उसको देखने आया। तीन दिन तक वह महा पंडित विष्णुशर्मा का अतिथि बना रहा। उसने गाँव के लोगों के सामने विष्णुशर्मा के शिक्षा-दान की बड़ी प्रशंसा की। चलते वक़्त उसने विष्णुशर्मा को थोड़ा धन पुरस्कार के रूप में दिया और बड़ी प्रसन्नता के साथ वहाँ से चला गया।

महापंडित परमानंद के आने से विष्णुशर्मा के प्रति गाँव के प्रमुख व्यक्तियों का आदर भाव दुगुना हो गया। उन सबने विष्णुशर्मा की अच्छी आर्थिक सहायता भी दी। उस धन से विष्णुशर्मा ने और अनेक गरीब विद्यार्थियों की शिक्षा और सबके खाने-पीने का भी इंतजाम किया। इस वजह से आस-पास के गाँवों के विद्यार्थी भी पढ़ने के लिए आने लगे।

जब पाठशाला की अच्छी उन्नति होने लगी, तब विष्णुशर्मा का अचानक देहांत हो गया। इससे पाठशाला चलाने का भार विष्णुशर्मा के पुत्र देवशर्मा पर आ पड़ा। देवशर्मा भी अपने पिता के समान योग्य

निर्मलानंद

पंडित था। लेकिन उसका स्वभाव विष्णुशर्मा से भिन्न था। विष्णुशर्मा ने जिस ढंग से पाठशाला चलायी वह देवशर्मा को पसंद न आया। विष्णुशर्मा को काफ़ी धन मिला था, मगर उसने उसे अपने परिवार के भरण-पोषण में नहीं लगाया बल्कि विद्यार्थियों के लिए ही खर्च किया।

देवशर्मा ने ऐसा नहीं किया। उसने कुछ नियम बनाये। वे नियम ये थे, प्रत्येक विद्यार्थी को यथाशक्ति गुरुदक्षिणा देनी चाहिये, हर एक के खाना व कपड़े का खर्च खुद उठाना चाहिये।

इन नियमों के अमल में आते ही गरीब विद्यार्थियों ने पाठशाला छोड़ दी। इसलिए पाठशाला की संख्या घट गयी। देवशर्मा अधिक धन देनेवालों को मन लगाकर पढ़ाता और कम देनेवाले विद्यार्थियों के प्रति लापरवाही दिखाता था। धीरे धीरे पड़ोसी गाँवों से आनेवाले विद्यार्थियों ने पाठशाला छोड़ दी, साथ ही थोड़ी बहुत गुरु-दक्षिणा देनेवाले विद्यार्थियों ने भी यह सोचकर पाठशाला छोड़ दी कि उनकी शिक्षा में गुरु दिलचस्पी नहीं लेता।

इन कारणों से विष्णुशर्मा की मृत्यु के बाद एक साल के अन्दर लगभग पाठशाला बंद सी हो गयी। अब देवशमा क पास केवल दो-तीन विद्यार्थी ही बच रहें। उनकी दक्षिणा से देवशर्मा का परिवार चलाना भी मुश्किल सा हो गया। उसने जो सोचा था, उसके उल्टा ही हुआ।

उसी गाँव में देवव्रत नामक एक युवक था। वह गरीब था। उसने अपने बचपन में विष्णुशर्मा से थोड़ी बहुत शिक्षा पायी थी। वह दिन भर खेत में काम करता और रात को गरीब विद्यार्थियों को पढ़ाता था। वह विद्यार्थियों से कुछ नहीं लेता था, फिर भी दिल लगाकर पढ़ाया करता था। देवशर्मा की पाठशाला को जो

विद्यार्थी छोड़ चुके थे, वे रात के समय देवव्रत की पाठशाला में जाने लगे।

देवव्रत की लोकप्रियता देख देवशर्मा मन ही मन उससे ईर्ष्या करने लगा। उसने सारे गाँव में यह अफ़वाह फैलायी कि देवव्रत उससे ईर्ष्या करता है, इसलिए उसने एक अलग पाठशाला खोली और अबोध बच्चों को बहका कर उनका भविष्य बरबाद कर रहा है। अलावा इसके जो खेत जोतने का काम करता है, वह क्या जाने कि पढ़ाई क्या चीज होती है। इस प्रकार देवशर्मा ने देवव्रत के विरुद्ध दुष्प्रचार किया, फिर भी देवशर्मा के पास एक विद्यार्थी भी पढ़ने न गया।

दिन बीतने लगे। एक दिन देवशर्मा के कानों में यह खबर लगी कि महापंडित परमानंद उस गाँव में आये हैं और दो दिन से देवव्रत के यहाँ रह रहे हैं। गाँव के प्रमुख व्यक्ति उसके यहाँ जा रहे हैं और दो दिनों से वहाँ पर गोष्ठियाँ हो रही हैं।

तीसरे दिन देवशर्मा देवव्रत के घर गया। परमानंद ने शिक्षा-दान पर चर्चा करते हुए गाँव के प्रमुखों से कहा–"देवव्रत जो शिक्षा-दान कर रहा है, वह बहुत ही प्रशंसनीय है। अन्य दानों के सामान शिक्षा-दान भी तारीफ़ के लायक़ है। शिक्षा-दान करनेवाला व्यक्ति महापुरुषों में गिना जायगा। विष्णुशर्मा का सच्चा शिष्य और वारिस देवव्रत ही है।"

परमानंद के चले जाने के बाद देवव्रत की पाठशाला में विद्यार्थियों की संख्या बढ़ी। उसे अनेक लोगों से चंदा मिला। गाँव के सभी बच्चे उसकी पाठशाला में पढ़ने जाने लगे। विष्णुशर्मा की भांति देवव्रत ने भी विद्यार्थियों को खाना-कपड़े का इंतज़ाम किया। कुछ ही महीनों में गाँव के सभी बच्चे शिक्षित हुए।

आज्ञः सुखमाराध्यस्सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः
ज्ञानलव दुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं नरंजयति ॥ १ ॥

जो अज्ञानी है, उसे आसानी से समझाया जा सकता है। जो ज्ञानी है, उसे सरलता से समझाया जा सकता है। लेकिन जो जानते हुये न जानता है, या ज्ञानी होते हुए भी अज्ञानी है, उसे समझाना ब्रह्मा के लिए भी कठिन है।

प्रहस्य मणिमुद्धरेत् मकरवक्री दंष्ट्रांतरात्;
समुद्रमपि संतरेत् प्रचल धूर्मिमालाकुलं;
भुजंगमपि कोपितं शिरसि पुष्पवत धारयेत्;
नतु प्रतिनिविष्ट मूर्खजनचित्त माराधयेत् ॥ २ ॥

मगर-मच्छ के सर से मानिक को निकाला जा सकता है, ऊँची लहरों से लहरानेवाले महा समुद्र को पार किया जा सकता है, मस्तक पर फूल की भांति सर्प को भी धारण किया जा सकता है, लेकिन मूर्ख लोगों के साथ मैत्री करके भी उन के स्वभाव का पता लगाना किसी के लिए भी संभव नहीं है।

लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नतः पीडयन्;
पिबेच्च मृगतृष्णिंकासु सलिलं पिपासार्दितः;
कदाचि दपि पर्यटन् शशविषाण मासादयेत्;
नतु प्रतिनिविष्ट मूर्खजनचित्त माराधयेत् ॥ ३ ॥

बालू को निचोड़कर तेल निकाला जा सकता है, मृग मरीचिका में से पानी निकालकर पिया जा सकता है, घूम-फिरकर खरगोश के सींग भी प्राप्त सकते हैं, मगर मूर्खों के मन को प्रसन्न बनाना संभव नहीं है।

मूर्ख

धन और सुख

एक शहर में एक व्यापारी था। वह पढ़ा-लिखा और अच्छे स्वभाव का था। वह धनी भी था और ऊँचे पैमाने पर व्यापार किया करता था। इसलिए उसे पल-भर भी फ़ुरसत नहीं मिलती थी। वह वक़्त पर खाना नहीं खा पाता, सारा दिन हिसाब-क़िताब देखने, चर्चा करने, ख़रीद-फ़रोख़्त करने इत्यादि में बीत जाता। कभी किसी दिन इन्हीं चिंताओं में उसे नींद तक न आती। किसी न किसी समस्या पर सोचते वह सारी रात जागता रहता।

व्यापारी की पत्नी परेशान थी। वह अपने पति से कहती–"तुम रात-दिन इतने परेशान क्यों रहते हो? व्यापार थोड़े ही रुक जायगा? आराम भी तो किया करो।"

व्यापारी अपनी पत्नी को समझाता– "पगली, व्यापार करना तलवार की धार पर चलने के समान है। शेर पर सवार करने के बराबर है। उससे उतरे नहीं, बस, वह निगल जायगा।"

व्यापारी के पड़ोस में एक ग़रीब आदमी रहा करता था। उसे जो भी काम मिलता, खूब मेहनत करके थोड़ा-बहुत कमा लाता और अपनी कमाई को पत्नी के हाथ सौंप देता। उन पैसों से वे लोग पेट भर लेते। कभी कभी उनका गुज़ारा न होता, फिर भी वह ग़रीब आदमी शाम को घर लौटता, आराम से सो जाता। पत्नी जो कुछ खिलाती खा लेता, घर के आंगन में बैठ कर सितार बजाते गाता।

ग़रीब के गीत व्यापारी को पसंद न थे, मगर उसकी पत्नी ध्यान से सुनती और यह सोचती कि उस ग़रीब की ज़िंदगी में जो आनंद है, वह उसके पति को नहीं है।

एक दिन व्यापारी की पत्नी ने अपने पति से यह बात कह दी। व्यापारी

रामनाथ

हिसाब-क़िताब देखना बंद करते हुए बोला– "तुम कहती हो कि ग़रीब को मुझसे ज़्यादा फ़ुरसत मिलती है, लेकिन उसके संगीत को रोकने में मुझे एक पल से ज़्यादा समय नहीं लगेगा। समझी।"

"कैसे रोक सकते हो?" पत्नी ने पूछा।

"थोड़े रुपये दूँगा।" व्यापारी ने कहा।

व्यापारी की पत्नी ने हँस कर कहा– "तुम रुपये दोगे तो वह और सुखी रहेगा।"

"मैं भी तो देखूँ?" व्यापारी ने कहा।

दूसरे दिन सवेरा होते ही व्यापारी ने ग़रीब आदमी को बुला भेजा और कहा– "देखो भाई, हम अड़ोस-पड़ोस में रहते हैं। फिर भी हमारा मिलना-जुलना नहीं होता। कुशल हो न?"

"आप से कुछ छिपा तो नहीं है। ख़ूब मेहनत करने पर ही पेट भरता है। कभी कभी पेट न भी भरता। फिर भी जो कुछ मिलता है, उसीसे दिन चलाते हैं। आराम से हैं।" ग़रीब ने जवाब दिया।

"मैं तुम्हारे बारे में कई दिनों से सोचता आ रहा हूँ। मुझे यह बिलकुल पसंद नहीं है कि तुम कड़ी मेहनत कर अपना पेट भरे। मैं तुमको पांच सौ तोले चाँदी दे देता हूँ। उस पूंजी को लगा कर तुम कोई अच्छा-सा व्यापार करो

और आराम से अपने दिन बिताओ।" ये शब्द कहते व्यापारी ने ग़रीब के हाथ चाँदी दे दी।

ग़रीब आदमी की समझ में न आया कि उसे कैसे व्यायारी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करनी है। वह व्यापारी से आज्ञा लेकर चाँदी को ले अपना घर पहुँचा।

उस दिन ग़रीब घर पर ही रहा। सारा दिन पति-पत्नी ने यही चर्चा करते बिताया कि उस धन का उपयोग कैसे करे। उन्हें यों तो कई उपाय सूझें, मगर उनमें कौन-सा उत्तम उपाय है, उनकी समझ में न आया। उस रात को वे वक़्त पर ठीक से खा भी न पाये। देरी से खाने पर भी ग़रीब को भूख न लगी थी। खाने में स्वाद भी न रहा। उस रात को सितार बजाते उसने गीत भी न गाये।

रात को उसे नींद भी न आयी। बिस्तर पर करवटें बदलता रहा। सवेरा होते ही उसने पहला काम यही किया कि धन-सुरक्षित है कि नहीं, इसकी जाँच की।

तीन दिन जैसे-तैसे बीत गये। अचानक ग़रीब आदमी में ज्ञानोदय हुआ। वह धन लेकर व्यापारी के घर पहुँचा।

"क्यों भाई, कुशल हो न? निर्णय कर लिया कि धन का उपयोग कैसे करना चाहिये?" व्यापारी ने ग़रीब से पूछा।

"हाँ, हाँ, मैंने निर्णय कर लिया है। आप अपना धन वापस ले लीजिये। मैं आपके उपकार को कभी भूल नहीं सकता।" ये शब्द कहते व्यापारी को धन लौटा कर अपना घर चला गया।

तीन दिन बाद फिर वह काम पर गया। उसे लगा कि उसका दिल हल्का हो गया है। उस रात को उसने सितार बजाते अच्छे गीत गाये। व्यापारी की पत्नी उन गीतों को सुनते सोचने लगी कि ऐसा सुख उसके पति को प्राप्त नहीं है। उसकी आँखें गीली हो गयीं।

शिथिलालय

[२७]

[वृच्छिक टापू के रास्ते में शिखिमुखी के दल की जांगला से भेंट हुई। जांगला ने शिखी से बताया कि पुजारी ने उसे मार डालना चाहा तो वह बच निकला। सूर्योदय के होने पर सब रवाना हुए। एक टापू के नुक्कड़ पर उन्हें पुजारी की नावें दिखायी दीं। विक्रम ने पुजारी पर बाण छोड़े। बाद...]

विक्रमकेसरी के बाण पुजारी को ही नहीं बल्कि उसकी नाव को भी भेद न पाये। जल-जंतु के हमले से जो तरंगें उठीं, उनकी वजह से पुजारी की नावें डगमगाने लगीं। जल-जंतु ने एक आदमी को पकड़कर निगल डाला, पेट भारी हो गया था, इसलिए अब उसकी गति मंद हो गयी। एक-दो मिनट बीत गये। जलजंतु ने रुककर गर्दन उठा एक बार चारों तरफ़ नज़र डाली।

उस भयंकर जानवर की नज़र से बचने के लिए शिखिमुखी के दल के लोग निकट की झाड़ियों में जा छिपे। शिखिमुखी लाल कुत्ते की पीठ पर इस विचार से हाथ फेरने लगा, ताकि वह भूंक न उठे। उसे इस बात का डर ज़्यादा था कि जल-जंतु कहीं उनकी नावों को डुबो न

बैठे। ऐसा हो जाय तो वे लोग उस निर्जन टापू में असहाय स्थिति में रह जायेंगे...

देखते-देखते शिथिलालय के पुजारी की नावें टापू का नुक्कड़ पार कर आँखों से ओझल हो गयीं। जल-जंतु थोड़ी देर तक इधर-उधर नज़र दौड़ाते पानी में लोटता रहा, तब किसी दूसरे टापू की ओर चल पड़ा। शिखिमुखी का दल उसकी ओर ताकता रहा, तब अपनी नौकाओं में आकर आगे बढ़ा।

शिखिमुखी का दल एक दूसरे रास्ते से यात्रा करनेवाला था, इसलिए उन्हें जल-जंतु का भय न रहा। मगर उन्हें इस बात का डर था कि ऐसे जानवर शायद और भी हों। इन सब से बढ़कर उनकी शंका यह थी कि पुजारी ने उनके आगमन का समाचार पहले ही भाँप लिया है।

नावों के रवाना होने के पहले शिखिमुखी ने अपने दल के लोगों को संबोधित कर कहा–"तुम सब लोग भली भाँति जानते हो कि वृच्छिक टापू में जानेवाले रास्ते में हमें असंख्य कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। मुझे और विक्रम को किसी भी हालत में वहाँ जाना जरूरी है। अगर बाक़ी लोगों में से कोई यहीं पर ठहर जाना चाहे तो मुझे कोई एतराज़ नहीं है। वे खुशी से यहाँ ठहर सकते हैं। वापसी यात्रा में उन्हें अपने साथ ले जायेंगे। इस बीच में उनके लिए आवश्यक खाद्य पदार्थ भी देते जायेंगे।"

शिखिमुखी की बातें सुनकर सब पल भर के लिए चकित रह गये। नांगसोम, अजित और बीरभद्र के साथ लंगड़े जांगला ने भी एक स्वर में यही बताया कि हमारे इस प्रयत्न में चाहे हमें किसी भी प्रकार की तकलीफ़ों का सामना क्यों करना पड़े तो भी हमें वृच्छिक टापू में जाना ही होगा।

जांगला ने यहाँ तक बताया कि उस दुष्ट पुजारी का अंत करना होगा। तभी उसके मन को शांति मिल सकती है। इसलिए जरूरत पड़ने पर वह अकेले ही सही, वृच्छिक टापू में जाने को तैयार है।

अपने अनुचरों की दृढ़ता और हिम्मत पर विक्रम तथा शिखिमुखी बहुत प्रसन्न हुए। नौकाओं ने यात्रा आरंभ की। हवा का रुख अनुकूल था। इसलिए उसके पाल उठाये गये। उनसे पहले रवाना हुई पुजारी के दल की नौकाओं के वास्ते सब ने चारों ओर दृष्टि दौड़ाकर देखा। मगर उन्हें पुजारी की नावें कहीं दिखायी न दीं। सूरज डूबने को था। शिखिमुखी के दल ने अपनी नावों को एक छोटे से टापू के पास किनारे लगाकर उन्हें किनारे के पेड़ों से रस्सों से बाँध दिया। वहीं पास में रसोई का प्रबंध करने लगे।

रसोई के बनने पर सब ने खाना खाया। रात बीत गयी थी। उस टापू में मगर-मच्छों के कोई निशान नजर न आते थे। लेकिन पेड़ों पर तरह-तरह के जल-पक्षी थे जो रात में भी जोर जोर से कलरव कर रहे थे। ऐसा मालूम होता था कि

उनका सो जाना भी मुश्किल है। लेकिन लाचारी थी।

अलाव जलाकर शिखिमुखी और उनके अनुचर वार्तालाप करने लगे। उन्हें थोड़ी दूर पर लहरों के थपेड़े खाते उस अंधकार में डोलनेवाली नावें भूतों की तरह दीखने लगीं। थोड़ी देर बाद एक एक करके वे सब लोग अलाव के चारों तरफ़ लेट गये। दूसरे पहर में पहरा देने का काम नांगसोम का था।

नांगसोम भाला लिये एक बार नावों को देख आया, फिर अलाव के पास आकर बैठ गया। जल-पक्षियों का कलरव उसे

नांगसोम ने लाल कुत्ते के सर को इस तरह सहलाया ताकि वह भूंक न उठे। तब भाले को दबाकर पकड़ लिया और झुक कर चलते नावों के पास पहुँचा। उसने देखा कि एक नाव बार-बार एक ओर झुक रही है।

नांगसोम को लगा कि नावों के नीचे शायद मगर-मच्छ लड़ रहे हैं। मगर ध्यान से देखने पर उसे जल में हिलोरें दिखायी न दीं। इस पर उसे संदेह हुआ कि दुश्मन या तो नाव में छेद करने आया हुआ है, या उसे चुराकर ले जाने के लिए आ पहुँचा है।

नांगसोम ने लाल कुत्ते को किनारे पर छोड़ दिया और वह चुपचाप पानी में उतर कर नाव के पास पहुँचा। वह धीरे से नाव पर चढ़ गया। उस वक़्त नाव इधर-उधर डोलने लगी। तुरंत उसके नीचे से एक काली आकृति बाहर निकली। उस धुँधली चाँदनी भी में दोनों ने भली भांति एक दूसरे को पहचान लिया।

पलक मूंदने की देरी थी, बस, नांगसोम ने पूरी ताक़त लगाकर अपना भाला उस काली आकृति पर फेंक दिया। उसी समय पानी में रहनेवाले ने भी अपने

परेशान करने लगा। उसने एक बार जंभाइयाँ लीं, पास में खड़े लाल कुत्ते के सर पर हाथ फेरने लगा।

लाल कुत्ते ने सर घुमा कर नावों की ओर देखा। एक क़दम आगे बढ़ा कर भूंक उठा। नांगसोम जानता था कि लाल कुत्ता खतरे को भाँपने में बड़ा होशियार है। इसलिए उसने उस दिशा में देखा, जिस ओर लाल कुत्ता क़दम बढ़ा रहा था। उसे लगा कि एक नाव पल भर के लिए दूसरी ओर उलट कर दूसरी नाव से थोड़ी दूर हट रही है और बीच बीच में टकरा रही है।

CHITRA
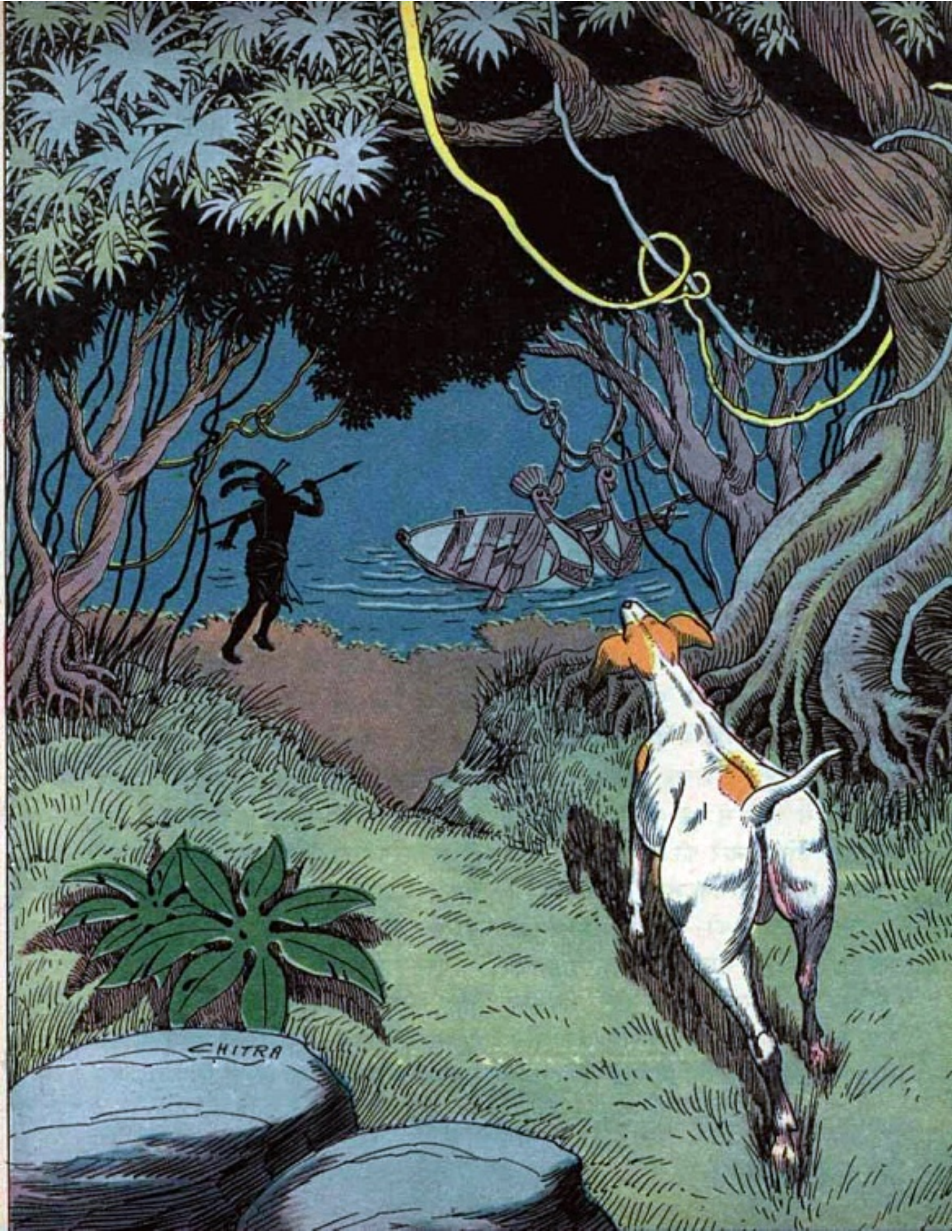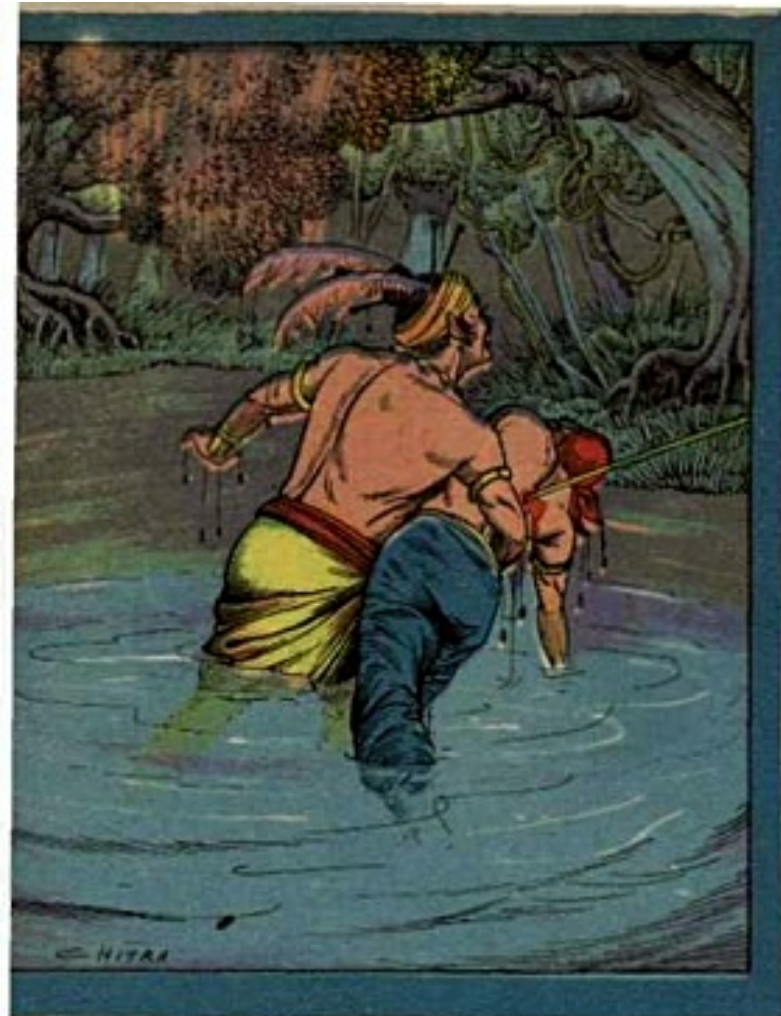
भाले का वार नांगसोम पर किया। वह भाला नांगसोम को न लगा, बल्कि नाव के किनारे से जा लगा। पर नांगसोम का भाला दुश्मन की पीठ में जा चुभा।

दुश्मन ने ज़ोर से कराहा। झट नांगसोम नाव पर से पानी में कूद पड़ा। दुश्मन को पकड़कर उसे किनारे की ओर खींचते हुये चिल्ला पड़ा–"दुश्मन आया है, दुश्मन!"

उस पुकार को सुनकर शिखिमुखी वगैरह नींद से जाग उठे और नांगसोम के पास दौड़े आये। तब तक नांगसोम उस घायल दुश्मन को किनारे तक खींच लाया था। उसकी पीठ में भाला चुभा हुआ ही रह गया था। वह पीड़ा से कराह रहा था। अजित के हाथ से मशाल लेकर उस रोशनी में शिखिमुखी ने घायल के चेहरे को ध्यान से देखा। वह और कोई नहीं, सवर बस्ती के निकट के जंगलों में लूट-मार करनेवाले दल का आदमी था। उस दल के दो-तीन लोग शिथिलालय के पुजारी के साथ मिलकर गोलभरा आये थे।

नांगसोम ने शिखिमुखी को सारी बातें संक्षेप में बता दीं। तब शिखिमुखी ने दुश्मन से कहा–"तुम ने जो कुछ किया, उसके लिए उचित सज़ा मिल गयी है। तुम्हारी पीठ में जो भाला चुभा हुआ है, उसे मैं निकलवाये देता हूँ। मगर तुम झट मर जाओगे। मरने के पहले तुम सच्ची बात बतला दो। तुम हमारी नावों में छेद करके उनको डुबोने के लिए आये हुये हो न? पुजारी किस टापू में उतरा है? सच्ची बात बता दो, वरना तुम्हारी जान की खैर नहीं।"

दुश्मन एक बार पीड़ा से कराह उठा। पहले सवाल का उसने स्वीकृति सूचक सर हिलाकर जवाब दिया, फिर पास के एक टापू की ओर हाथ का संकेत किया। तब

शिखिमुखी ने नांगसोम को आदेश दिया कि वह दुश्मन की पीठ से भाला निकाले। नांगसोम ने दुश्मन की पीठ में से भाला निकाला। दुश्मन पल भर छटपटाकर दम तोड़ बैठा।

"शिखी, वह बदमाश पुजारी जंगलों में हमारा पीछा करते जैसे गोल्भरा पहुँचा था वैसे ही अब वह वृच्छिक टापू तक हमारा पीछा कर रहा है!" विक्रमकेसरी ने कहा।

"वह यूं ही पीछा नहीं करता। बल्कि रास्ते में ही हमारा अंत करना चाहता है! उसका विचार है कि हमारी नावों को इस नदी में डुबो दे तो हम इस निर्जन टापू में भूख से तड़प कर मर जायेंगे। चाहे, बात जो भी हो, हमें इन नावों को बचाने के लिए कड़ा पहरा देना होगा।" शिखिमुखी ने समझाया।

नांगसोम ने सलाह दी कि इस अंधेरे में शिथिलालय के पुजारी वाले टापू में पहुँच कर उसका खात्मा कर देना उचित होगा। मगर शिखिमुखी ने उस सलाह का विरोध करते हुये कहा–"यह तो दुस्साहस होगा। किसी पेड़ की आड़ में छिपे रह कर पुजारी और उसके अनुचर धोखे से हम पर हमला कर बैठे तो क्या होगा? हमें तो संभलकर क़दम बढ़ाना होगा। पुजारी बड़ा होशियार और दगाबाज है। न मालूम वह कब कैसा जाल बिछाकर हमें फँसाना चाहता है। वह यह चाहता है कि हमें वृच्छिक टापू तक पहुँचने के पहले ही मार डाले तो सारी संपत्ति आसानी से उसके हाथ लग सकती है। ताड़ पत्र तो उसके हाथ लग गये हैं। अब हम उसके रास्ते के कांटे बने हुये हैं। हमें अपने रास्ते से हटाने के लिए वह सब प्रकार की कोशिशें करेगा। इसलिए हमें सतर्क रहना है।"

इसके बाद बिना किसी प्रकार के खतरे के रात बीत गयी। सवेरे उठकर शिखिमुखी के दल ने नावों को यात्रा के लिए तैयार किया। तब दुश्मन के संकेत के अनुसार उस टापू में जा उतरे। बहुत खोज-बीन करने पर उन्हें अलाव दिखायी दिये जिन्हें पुजारी के दल ने रात में जला रखे थे। शायद वे लोग तड़के ही उठकर वहाँ से चल दिये होंगे।

इसके बाद चार दिन तक छोटे-बड़े चार टापुओं से होकर शिखिमुखी के दल ने यात्रा की। पाँचवें दिन संध्या तक उन लोगों ने एक बड़े टापू को देखा जिस में ऊँचे-ऊँचे पहाड़ व वृक्ष थे। पर उन्हें इस बीच कहीं भी पुजारी की नावें दिखायी न दीं।

नांगसोम ने बताया कि उसने अपनी जाति के नेताओं द्वारा वृच्छिक टापू के जो समाचार सुने थे वह टापू यहीं है। उसकी बात सुनते ही शिखिमुखी और विक्रमकेसरी खुशी से फूले न समाये। सब ने नावों को किनारे ले जाने का निश्चय किया।

थोड़ी देर में दोनों नावें किनारे जा पहुँचीं। सब लोग नावों में से किनारे उतरे। सूरज डूबने को था। शिखी और विक्रम इस विचार से निकल पड़े कि पास के पहाड़ पर चढ़कर देखे कि वृच्छिक टापू का नज्जारा कैसा है? बाक़ी लोग नावों के पास ही रह गये।

दोनों एक ऊँचे पहाड़ पर चढ़ कर चारों तरफ़ देखते रह गये। दूर पर सब से ऊँचा एक पहाड़ दिखायी दिया। उसे देख दोनों लौट ही रहे थे कि उनकी दृष्टि नीचे के एक टीले पर पड़ी। तब उनके आश्चर्य की सीमा न थी। उस टीले पर एक बहुत ही पुराना एक मंदिर था जो गिरने की हालत में था। (और है)

दिली दोस्त

हठी विक्रमादित्य पेड़ के पास लौट आया। पेड़ से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने यों कहा—"राजन, साधारण मनुष्यों को अपूर्व अनुभवों के द्वारा सुख की बनिस्बत कष्ट ही ज्यादा प्राप्त होते हैं। इसके उदाहरण स्वरूप में तुमको शौनक और मौद्गल्य की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनो।"

बेताल यों कहने लगा—"प्राचीन काल में स्वर्णा नदी के किनारे एक गाँव था, जिसमें शौनक और मौद्गल्य नामक दो आदमी रहा करते थे। वे दोनों दिली दोस्त थे। पल भर भी एक दूसरे को छोड़ रहा नहीं करते थे। अगर किसी दिन उन दोनों की मुलाक़त न होती तो वे चैन की नींद नहीं सो पाते थे। उन्हें ऐसा

वेताल कथाएँ

एक दिन रात को शौनक ने एक सपना देखा। उस सपने में उसने मौद्गल्य को देखा। वह देवताओं के जैसे वस्त्र पहने हुए था। उसने शौनक से कहा–"दोस्त! मुझे यमलोक में बड़ा अच्छा पद मिला है। वहाँ पर मुझे कई अधिकार मिले हैं। इसलिए हम दोनों रोज वहाँ पर मिल सकते हैं। इसका इंतज़ाम मैंने पहले ही कर रखा है। अगर तुम सोने के पहले एक मंत्र पढ़ोगे तो नींद के वक़्त तुम यमलोक में आकर मेरे साथ समय काट सकते हो।" यह कहकर उसने शौनक को एक मंत्र का उपदेश किया। शौनक की प्रसन्नता की सीमा न रही।

मालूम होता कि मानों कोई अमूल्य वस्तु खो गयी हो।

एक दिन अचानक मौद्गल्य की मौत हो गयी। शौनक अपने दोस्त की लाश पर गिरकर बुरी तरह रोया। चार बलवान आदमियों ने शौनक को मौद्गल्य की लाश पर से बाहर खींचा। तब भी वह उठने का नाम न लेता था।

अपने दिली दोस्त की मौत से शौनक का दिल बैठ गया। उसे सारी जिंदगी अंधकारमय प्रतीत होने लगी। वह सदा खोया खोया-सा रहने लगा।

दूसरे दिन शौनक ने नींद से जागकर देखा, उसका मन हल्का था। उसने सोचा कि रात में उसने जो सपना देखा, वह यथार्थ होगा। उस रात को शौनक ने सोने के पहले उस मंत्र का पाठ किया। इसके थोड़ी देर बाद वह यमलोक में था। मौद्गल्य ने आगे बढ़कर शौकन का स्वागत किया और उसे अपने साथ ले गया। दोनों ने बड़ी देर तक बातचीत की। उन्हें समय का भी पता न चला। लेकिन सवेरे जब शौनक जाग पड़ा तो वह अपने घर में ही था।

उस दिन से लेकर वह हर रात को सोने के पहले मंत्र पढ़ता, यमलोक में जाकर मौद्गल्य से बातचीत कर लौट आता। इसलिए मौद्गल्य के मर जाने की चिंता उसे ज़रा भी नहीं सताती थी।

एक दिन रात को शौनक की बगल में उसके पाँच साल का पोता भी सो गया। अपने दादा के मंत्र पढ़ते देख उसने भी ध्यान से सुना और वह मंत्र पढ़ा। शौनक अपने साथ यमलोक में अपने पोते को भी देख घबरा उठा। लेकिन वह लड़का डरा हुआ मालूम न होता था। थोड़ी दूर पर लड़कों को खेलते देख वह भी दौड़ गया और उनके साथ खेलने लगा।

अपने पोते को लड़कों के साथ खेलते देख शौनक का मन शांत हुआ। वह रोज की तरह मौद्गल्य से मिलकर बातचीत में खो गया। लेकिन सवेरे उठकर शौनक ने देखा कि उसकी बगल में उसके पोते का निर्जीव शरीर पड़ा हुआ है। यमलोक से शौनक लौट आया था, मगर उसका पोता वहीं रह गया था। दूसरे दिन रात होने तक वह कुछ कर भी न पाया। सारा दिन वह परेशान था।

घर की औरतें लड़के को मरे देख दहाड़े मारकर रोने लगीं।

"तुम लोग घबराओ नहीं, कल तक वह जी उठेगा।" शौनक ने उन्हें समझाया। मगर सब लोग यह शंका करने लगे कि लड़के की मौत का कारण शौनक ही है।

शौनक को वह दिन एक युग जैसा मालूम हुआ। रात को लेटते ही शौनक ने मंत्र का पाठ किया। यमलोक में पहुँचते ही उसने अपने मित्र से कहा—"कल मेरे साथ मेरा पोता आया था। वह यहीं पर रह गया है। जल्दी उसकी खोज कराओ।"

"जन्म और मृत्युओं की बही देखने पर ही हमें इसका पता लग सकता है। चलो, हम चित्रगुप्त के दफ़्तर में चलेंगे।" मौद्गल्य ने कहा।

चित्रगुप्त के पास कई बहियाँ थीं। उन्हें उलटकर देखने में काफ़ी समय लगा।

"बाप रे बाप! तुम्हारे पोते का पता लग गया है! तुम बड़े ही क़िस्मतवर हो। तुम्हारे पड़ोसी गाँव में आज रात को एक सुअर तेरह बच्चे देगा। उसमें एक बच्चे के चेहरे पर सफ़ेद दाग होगा। वही तुम्हारा पोता है।" मौद्गल्य ने कहा।

"मैं उसे कहाँ खोजवा सकता हूँ। यह तो नामुमक़िन है।" मौद्गल्य ने जवाब दिया।

"क्यों मुमक़िन न होगा? लड़का थोड़े ही गायब हो जायगा?" शौनक ने पूछा।

"वह संभव नहीं है।" मौद्गल्य ने कहा। इस पर शौनक की आतुरता बढ़ गयी।

"मेरे पोते का पता लगाये बिना मैं यहाँ से हिल नहीं सकता। चाहे मैं मर भी जाऊँ, मुझे कोई चिंता नहीं है। मैं आज अपने पोते को साथ लेकर ही लौटूंगा।" शौनक ने हठ किया।

"यही मेरी क़िस्मत है? सुअर के पेट से पैदा होना मनुष्य के लिए शाप ही होगा।" शौनक ने अचरज में आकर पूछा।

"मेरा मतलब यह है कि तुम सवेरे उठते ही उस गाँव में चले जाओ। सुअर के उस बच्चे को मार डालो जिससे तुम्हारा पोता जी उठेगा।" मौदगल्य ने समझाया।

थोड़ी देर बाद शौनक जाग पड़ा। उसने पड़ोसी गाँव में जाकर उस सुअर का पता लगाया। उसके बच्चों को

गिनकर देखा। सफ़ेद दागवाले बच्चे को रुपये देकर खरीदा। उसे वहीं पर मारकर घर लौटा। देखता क्या है, उसका पोता हमेशा की तरह घर में खेल रहा है। शौनक की खुशी का ठिकाना न रहा। लेकिन इसके बाद वह कभी यमलोक में न गया। और न अपने दिली दोस्त से उसकी मुलाक़ात हुई।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा– "राजन! मेरा एक संदेह है। यमलोक की यात्रा के द्वारा शौनक का कोई नुक़सान न हुआ बल्कि एक प्रकार से उसका लाभ ही हुआ। उसने अपने दिली दोस्त को देखने से अचानक क्यों बंद किया? इस सवाल का जवाब जानते हुए भी न बताओगे तो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा।"

इस पर विक्रमादित्य ने कहा–"शौनक के पोते का यमलोक में जाने, या उसका सुअर के पेट में पैदा होने में मौद्गल्य जिम्मेवार नहीं है। शौनक का अपने मित्र के प्रति स्नेह के घटने का कोई दूसरा कारण होगा। वह यह कि यमलोक के अधिकारी मौद्गल्य का मानव-दृष्टिकोण बिलकुल बदल गया है। जन्म और मृत्यु, उत्तम व्यक्तियों का हीन प्राणियों के रूप में पैदा होना उसकी दृष्टि में साधारण-सी बात हो गयी है। लेकिन शौनक में मानवता तब भी बची रही। उन दोनों की मानसिक स्थिति में जो अंतर आ गया, उसे शौनक अपने पोते की मृत्यु के समय जान सका। इसके बाद दोनों के बीच की मैत्री का घटना सहज ही है।"

राजा के इस प्रकार मौन-भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा।

(कल्पित)

समझौता

गरमी के दिन थे। जंगल के एक तालाब में पानी पीने के लिए एक सिंह और एक जंगली सुअर दोनों एक साथ आ पहुँचे। जंगली सुअर पहले ही आ गया था। इसलिए वह पहले पानी पीने लगा। मगर सिंह ने उसे ढकेलकर कहा–"मेरे प्यास बुझाने के बाद तुम पानी पिओ।"

"मैं पहले आया हूँ। इसलिए मेरे पीने के बाद तुम्हारी बारी है।" जंगली सुअर ने कहा।

"मेरी बात न मानोगे, तो पंजे की मार खाओगे।" सिंह ने कहा।

"मैं अपने दाढ़ों से तुम्हारा पेट चीर डालूँगा, खबरदार।" सुअर ने कहा।

दोनों एक दूसरे पर जूझ पड़े। भयंकर लड़ाई होने लगी।

इतने में पेड़ों पर पंखों की फड़फड़ाहट सुनाई दी। सिंह ने ऊपर देखा। भेरुण्ड दिखाई दिये। वे इस बात की ताक में बैठे थे कि पहले कौन-सा जानवर मरेगा।

"हम दोनों नाहक़ क्यों लड़ें? समझौता करें?" सिंह ने पूछा।

"मैंने कब इनकार किया?" सुअर ने कहा।

दोनों जानवर एक साथ पानी पीकर अपने अपने रास्ते चले गये।

काजी का कपट

बहुत सालों के पहले की बात है। गजनी नगर पर सुलतान महम्मद शासन करता था। एक दिन एक व्यापारी हिन्दुस्तान जाते गजनी में ठहर गया। वह नगर उस यात्री को बड़ा पसंद आया। इसलिए उसने निश्चय कर लिया कि वहीं पर अपना व्यापार करे। व्यापार में खूब लाभ हुआ। तब उसने एक गुणवती सुंदरी से विवाह किया और आराम से दिन काटने लगा।

कुछ और समय बीता। उसका व्यापार दिन प्रति दिन बढ़ता ही जा रहा था। उसका माल हिन्दुस्तान तक निर्यात किया गया। उसे खुद हिन्दुस्तान जाकर अपने व्यापार की देख-भाल करने की ज़रूरत आ पड़ी।

व्यापारी ने सोचा, उसे तो लंबी यात्रा करनी है। कम से कम एक साल का समय लगेगा। उसकी पत्नी को किसी के पास छोड़ जाना चाहे तो उस नगर में उसके कोई रिश्तेदार भी तो नहीं है। उस नगर में एक काजी था। लोग कहते थे कि वह बड़ा ही पवित्र आचरण वाला है। व्यापारी ने इसलिए काजी के पास जाकर कहा—"सभी लोग कहते हैं कि आप धर्मात्मा हैं। मैं व्यापार करने एक साल के लिए विदेशों में जा रहा हूँ। तब तक आप मेरी पत्नी को अपने घर में आश्रय देकर रक्षा करने की कृपा कीजिये। उसका जो खर्च होगा। मैं अभी दे जाता हूँ।"

काजी ने खुशी से मान लिया। व्यापारी अपनी पत्नी को काजी के घर छोड़ कर चला गया।

व्यापारी की पत्नी ने एक साल तक काजी के घर भगवान की प्रार्थना करते आराम से दिन गुजारे। लेकिन इस बीच काजी ने एक बार उसे देख लिया। उसकी

फ़ारस की लोक-कथा

खूबसूरत देख काजी चकित हो गया। उसके दिल में चोर आ बैठा। उसने किसी न किसी तरह व्यापारी की पत्नी को धोखा देने का निश्चय कर लिया।

एक दिन काजी की पत्नी व्यापारी की पत्नी को घर सौंप कर कहीं बाहर चली गयी। यह बात काजी को पहले ही मालूम हो गयी थी। इसलिए वह समय से पहले घर लौट आया। वह सीधे व्यापारी की पत्नी के कमरे में गया और बोला—"सभी लोग जानते हैं कि मैं पाप से डरता हूँ, धर्माचरण करता हूँ। मेरे सामने आने में तुम संकोच क्यों करती हो?"

काजी की बातें सुनने पर व्यापारी की पत्नी की हिम्मत बंध गयी।

"मुझे बड़ी भूख लगी है। खाना परोसोगी?" काजी ने पूछा।

वह औरत काजी को खाना परोसकर दूसरे कमरे में चली गयी। तब काजी ने अपनी जेब में से नशीली दवा निकाली और उसे खाने में मिलाया। इसके बाद व्यापारी की पत्नी को बुलाकर कहा—"देखो, तुम मुझे अकेले खाने को कहती हो? अकेले खाना महा पाप बताते हैं। इसलिए मुझे उस दोष से बचाने के लिए तुम भी थोड़ा हाथ बंटा लो।"

न्यायाधिकारी की बात का तिरस्कार करना उचित न समझ कर व्यापारी की पत्नी ने काजी के हाथ से दो कवल लेकर खाये और बेहोश होकर नीचे गिर पड़ी।

ठीक उसी समय किसीने दर्वाज़े पर दस्तक दिया। काजी घबरा उठा। उसने व्यापारी की पत्नी को उठा ले जाकर एक अलमारी में बंद किया।

दर्वाज़े के खुलते ही काजी की पत्नी बच्चों के साथ अन्दर आयी। काजी ने उसे देखते ही क्रोध का अभिनय करते हुये पूछा—"तुम कहाँ चली गयी थीं?"

"मैंने तो व्यापारी की पत्नी को घर सौंप दिया था। क्या वह घर में नहीं है?" काजी की पत्नी ने पूछा।

"मेरे आये दो घंटे हो रहे हैं। घर में कोई नहीं है। ऐरे-गैरे पर यक़ीन कर घर छोड़कर कैसे जा सकती हो? न मालूम क्या क्या चोरी गया है!" काजी ने डांटा।

इस बात पर काजी की पत्नी और उसके बच्चे भी अचरज में आ गये। वे लोग अच्छी तरह से जानते थे कि व्यापारी की पत्नी कैसी भली औरत है। वे लोग बात कर ही रहे थे कि व्यापारी भी आ पहुँचा। हिन्दुस्तान से वह उसी दिन लौट आया।

व्यापारी ने काजी से कहा—"मैं अपनी पत्नी को ले जाने के लिए आया हूँ।"

"तुम्हारी पत्नी बिना कहे कहीं चली गयी है।" काजी ने जवाब दिया।

"काजी साहब, आप परिहास कर रहे हैं। मेरी पत्नी को जल्द बुला लीजिये।" व्यापारी ने कहा।

"इस में परिहास की बात थोड़े ही है? मैं सच बता रहा हूँ।" काजी ने कहा।

"मेरी पत्नी ऐसा काम कभी नहीं करती।" व्यापारी ने कहा।

काजी ने क्रोध का अभिनय करते कहा—"तुम तो निरे बेवकूफ़ मालूम होते हो?

सुलतान ने काजी से गवाहों को हाज़िर करने का आदेश दिया। काजी ने अड़ोस-पड़ोस के बेकार लोगों को घूस देकर झूठी गवाही देने को उन्हें मनवाया। उन सबने काजी के कहे मुताबिक़ गवाही दी।

सुलतान ने व्यापारी की फ़रियाद को बरखास्त कर दिया। व्यापारी को कुछ करते न बना। वह हताश हो गया।

सुलतान महम्मद की एक आदत थी। वह मामूली आदमी की तरह पोशाक पहने गलियों में घूमता और लोगों की कठिनाइयों को समझने का प्रयत्न करता। इसी आदत के अनुसार सुलतान उस रात को नगर में घूमने लगा। वह जब एक दूकान के पास पहुँचा, तब उसने देखा कि कुछ लड़के वहाँ पर खेल रहे हैं। उन लड़कों ने एक को राजा बनाकर कहा—"अरे, तुम सुलतान की तरह फ़ैसला करोगे तो तुम्हें गद्दी से उतार देंगे, समझें।"

सुलतान ये बातें सुनकर दंग रह गया। सुलतान ने ये बातें कहनेवाले एक लड़के से पूछा—"सुलतान महम्मद का फ़ैसला क्या ठीक नहीं होता?"

"आज सुलतान ने जो फ़ैसला किया, वह क्या सही फ़ैसला है! कोई भी

नाहक़ मेरी निंदा न करो। जाकर अपनी पत्नी को ढूंढो।"

व्यापारी ने सीधे सुलतान के पास जाकर काजी पर शिकायत की।

सुलतान ने काजी को बुला कर कैफ़ियत तलब की।

काजी ने सुलतान से बताया कि तीन महीने पहले ही व्यापारी की पत्नी बिना कहे कहीं भाग गयी है। बहुत ढूंढ़ने पर भी उसका कहीं पता न चला।

"मेरी पत्नी कभी ऐसा नहीं कर सकती। काजी सफ़ेद झूठ बोल रहा है।" व्यापारी ने कहा।

बुद्धिमान आदमी उस फ़ैसले पर विश्वास कर सकता है?" लड़के ने जवाब दिया। ये बातें सुनने पर सुलतान सन्न रह गया और अपना सा मुंह लेकर घर चला गया।

दूसरे दिन सवेरे सुलतान ने उस लड़के को अपने घर बुलाकर पूछा-"आज तुम फ़ैसला करो।"

लड़के को न्याय की गद्दी पर बिठाया गया। पिछले दिन काजी के पक्ष में जितने लोगों ने गवाही दी, उन्हें एक-एक कर के बुलाकर लड़के ने पूछा-"क्या तुमने व्यापारी की पत्नी को देखा? उसकी क्या उम्र है? वह देखने में कैसी होती है?"

गवाहियों ने यह तो बताया कि उन लोगों ने व्यापारी की पत्नी को तो देख लिया है। मगर उसकी उम्र, क़द आदि का विवरण एक भी बता न पाया।

"तुम लोग सच बताओगे या फाँसी पर लटकवा दूं?" लड़के ने गवाहियों से पूछा।

झट उन लोगों ने लड़के के पैरों पर गिर कर सच्ची बात बता दी कि असल में वे लोग इस मुक़द्दमे के बारे में कुछ नहीं जानते। काजी ने धन का लोभ दिखाया, इसलिए झूठी गवाहियाँ दी हैं।

इसके बाद काजी को सच्ची बात बतानी ही पड़ी। व्यापारी की पत्नी को अलमारी से निकलवा कर उसे सौंपा गया। सुलतान ने काजी को देश निकाला सजा-दी और उसकी जायदाद को व्यापारी की पत्नी को सौंप दिया। लड़के ने जो इन्साफ़ किया, वह सुलतान भी न कर पाया था। इसलिए सुलतान उस लड़के से बहुत प्रभावित हुआ। उसे अपने घर रखकर पढ़ा-लिखाया और बड़े होने पर उसे अपने सलाहकार के रूप में नियुक्त किया।

घूसखोर

पुराने जमाने में एक राज्य में घूसख़ोरी का बोलबाला था। राजा ने कई बार चेतावनी दी, मगर कोई फ़ायदा न रहा। इसलिए जो भी घूसख़ोर पकड़ा जाता, उसे राजा बेरहमी के साथ टुकड़े-टुकड़ों में काटकर फेंकवाने लगा। काटने का काम एक नाई को सौंपा गया।

एक दिन राजा ने राजमहल पर खड़े खड़े नीचे देखा तो नाई अपराधी के साथ बातचीत कर रहा था। राजा को संदेह हुआ। उसने दोनों को ऊपर बुलाकर पूछा– "तुम लोग किस बात की बहस कर रहे हो?"

अपराधी ने राजा से कहा–' महाराज, नाई कहता है कि उसके पास दो छुरियाँ हैं। एक पैनी है और दूसरी धारहीन है। कहता है कि दो रुपये देने पर वह पैनी छुरी से जल्दी मुझे काट देगा, नहीं तो धारहीन छुरी से बड़ी देर तक काटकर मुझे सतायेगा।"
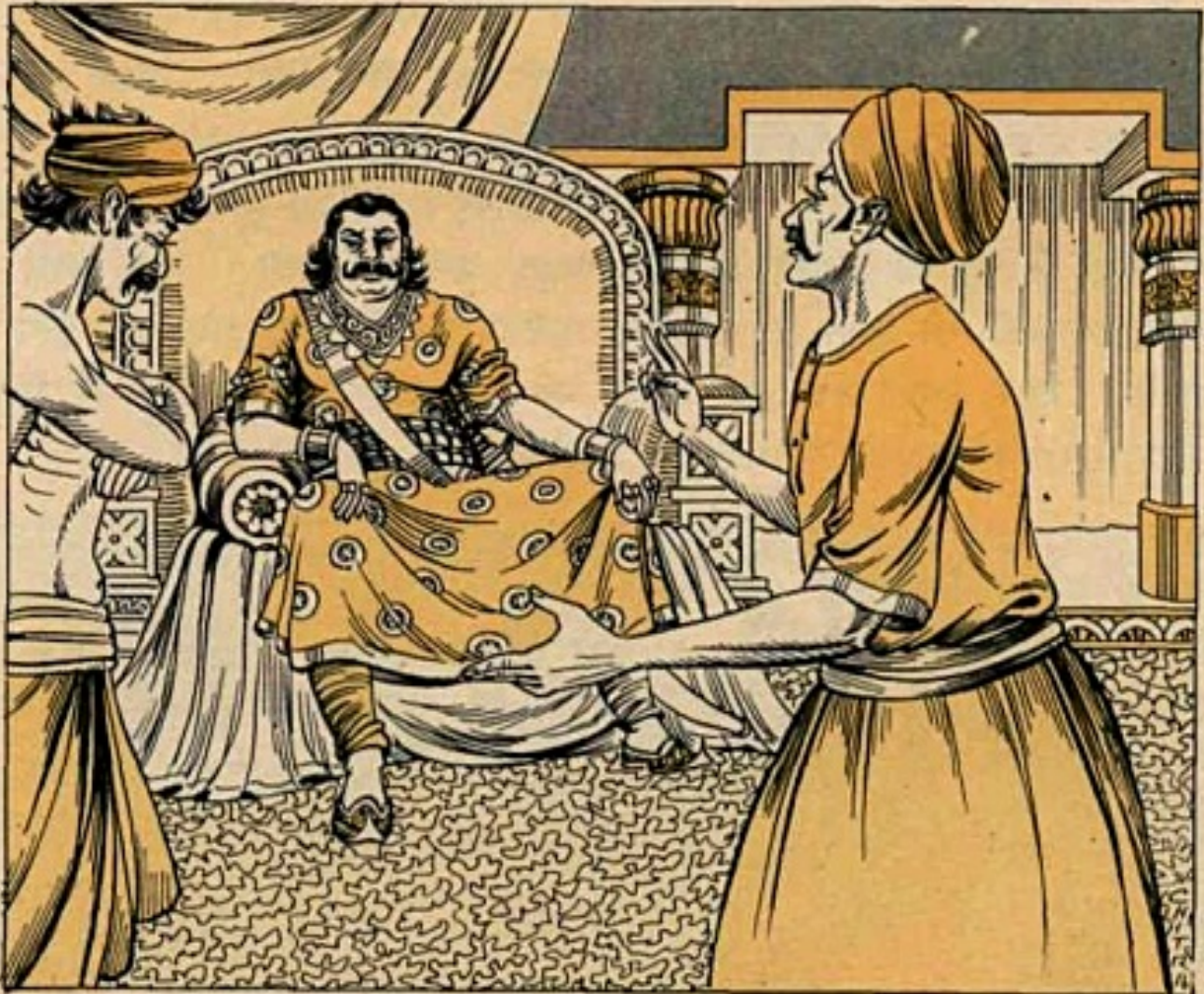
नन्हीं मुन्नी

एक शहर में एक अमीर था। उसे कोई संतान न थी। लेकिन उस दंपति ने संतान न होने पर कोई चिंता न की। क्यों कि उन्हें मनुष्यों से ही घृणा थी। यहाँ तक कि उसके घर कोई भिखमंगा भी आ जाता तो उसे गालियाँ देकर भगा देते। वह न जाता तो पीटते भी थे। उनमें दया की भावना बिलकुल न थी।

घर का काम करने के लिए वह दंपति दूर प्रदेश से एक लड़की को खरीद लाया। उस लड़की से वे दोनों इतना काम लेते कि उसे पल भर भी फ़ुरसत न मिलती। घर की मालिकिन एक दम डाइन थी। वह नाहक़ कोई न कोई काम बता देती, जब कभी उसे फ़ुरसत मिलती, वह लड़की अपनी बुरी हालत पर आँसू बहाती।

अगर वह लड़की सुंदर होती तो कोई न कोई उसे खरीदकर शादी करते, लेकिन वह लड़की सुंदर न थी। इसलिए लगता था कि उस अमीर के घर जिंदगी-भर उसे यातनाएँ भोगनी पड़ेंगी।

एक दिन वह चूल्हे में सूखी घास जला रही थी। उस प्रदेश के लोग जलावन के लिए सूखी घास ही इस्तेमाल करते थे। सूखी घास में जब-तब धान भी मिल जाते थे। नौकरानी सूखी घास जलाने के पहले धान को निकालकर सुरक्षित किया करती थी। इस तरह उसने सेर भर धान इकट्ठा कर छिपा लिया था।

एक दिन वह लड़की सूखी घास चूल्हे में डाल ही रही थी कि एक बूढ़े ने आकर दर्वाज़े पर पुकारा—"बेटी, भीख दो। भूख से मरा जा रहा हूँ।"

विपुल कुमार

छोटी लड़की भूख का मतलब खूब जानती थी। इसलिए उसे भिखारी पर बड़ी दया आयी। उस वक़्त घर के मालिक और मालिकिन घर में न थे। फिर भी घर की चीज़ें दूसरों को देने पर वे आसानी से पता लगा सकते थे। घर की मालिकिन को हर चीज़ का खूब पता था। इसलिए लड़की ने गुप्त रूप से जो कुछ धान इकट्ठा किया था, उसे बूढ़े की झोली में डाल दिया और कहा—"दादा, तुम जल्दी चले जाओ। घर के मालिक व मालिकिन आ जायेंगे। उनके हाथ और मुंह भी बड़े बुरे हैं।"

बूढ़े ने लड़की के हाथ एक गंदे कपड़े का टुकड़ा देकर कहा—"बेटी, जब भी तुम मुंह धोओगी, तब इस कपड़े से ही मुंह पोंछो। तुम्हारा भला होगा। मेरी बात पर यक़ीन करो।"

लड़की ने यह सोचकर उस कपड़े को लिया कि बूढ़े ने कृतज्ञतापूर्वक यह कपड़ा उसे दिया है। उसे न लेने पर बूढ़े को दुख होगा।

उसी वक्त घर का मालिक अपनी पत्नी के साथ आ पहुँचा। उसने पूछा—"यह बूढ़ा कौन है? क्या तुमने इसे कोई चीज दी! इससे तुम क्या बोलती हो?"

"मैंने घर की कोई चीज़ न दी। चाहे तो देख लीजिये।" लड़की ने जवाब दिया।

"दोगी तो मेरी बात जानती हो न?" मालिकिन ने कहा।

लेकिन घर की मालिकिन उस बूढ़े की तलाशी लेनेवाली थी कि बूढ़ा गायब हो गया। बूढ़े के खिसक जाने पर वे दोनों लड़की पर नाराज़ हो गये और उसे खूब पीटा।

उस दिन से वह लड़की जब भी स्नान करती, उसी गंदे कपड़े से पोंछ लेती। उस में शायद कोई प्रभाव था। क्यों कि उस लड़की का शरीर दिन ब दिन काले से पीला होता गया। रंग बदलने के साथ उसका चेहरा सुंदर भी होता गया।

घर की मालिकिन को जल्द ही मालूम हो गया कि यह गुलाम लड़की दिन ब दिन खूबसूरत बनती जा रही है। उसे लगा कि इस परिवर्तन का कोई कारण जरूर होगा। लड़की से पूछने पर उसने नहीं बताया। आखिर उस लड़की को खूब सताकर बूढ़े के दिये गंदे कपड़े का रहस्य जान लिया। दूसरे ही क्षण उन दोनों ने गंदा कपड़ा लड़की से छीन लिया और अपने मुंह धोकर उससे पोंछ लिया। उनका विचार था कि उनके चेहरों के सुंदर बनते ही उस गंदे कपड़े को किराये पर देकर खूब धन कमाये। लेकिन जब उन दोनों ने अपने चेहरे गंदे कपड़े से पोंछ लिया तब उनके शरीरों पर बाल और पूँछें भी उग आयीं। वे दोनों अपमान से दबे जाकर पास के जंगल में भाग गये। वह लड़की उनकी संपत्ति की अधिकारिणी बनी। अब वह सुंदर भी थी, इसलिए उस गाँव का धनी युवक उससे शादी करने को तैयार हो गया। वह लड़की उस युवक के साथ शादी करके आराम से दिन काटने लगी।
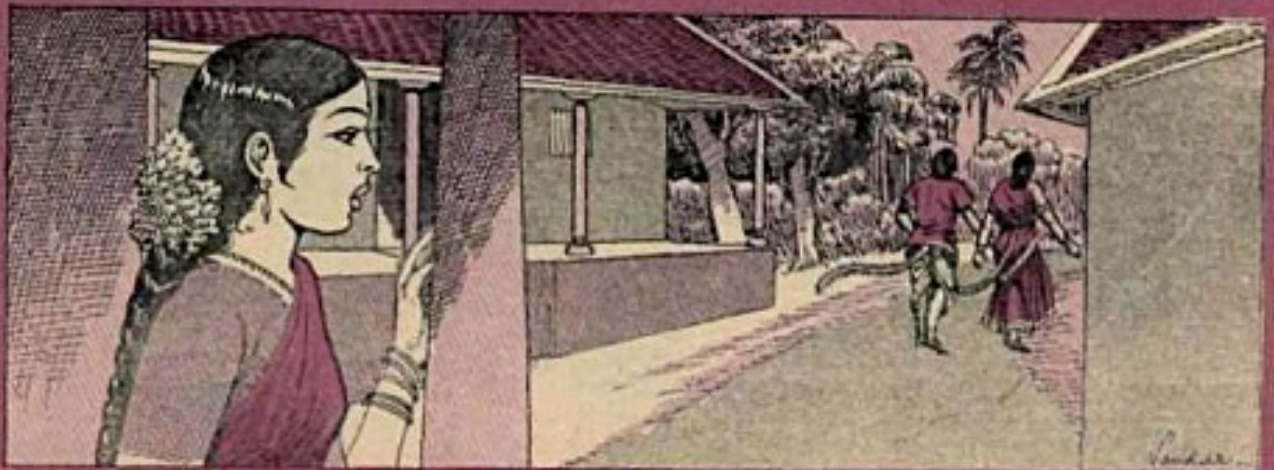
जायदाद का बंटवारा

एक व्यापारी के दो लड़के थे। बड़ा लड़का स्वार्थी था और दूसरा भोलाभाला। व्यापारी ने सोचा कि उसकी मृत्यु होने पर बड़ा पुत्र छोटे को धोखा दे सकता है। यह सोचकर उसने अपनी सारी जायदाद दो बोरों में बाँध दी। उसने मरते समय दोनों पुत्रों को पास बुलाकर कहा–"बेटे, मेरे पास जो कुछ संपत्ति है, सब दो बोरों में बाँधकर पश्चिमी दिशा के कमरे में रख छोड़ा हूँ। दोनों एक एक बोरा लेकर अपनी अपनी जिंदगी जिओ।"

कुछ दिन बाद व्यापारी मर गया। श्राद्ध के पहले दिन बड़े पुत्र ने कमरे में पहुँचकर बोरे खोलकर देखा। एक बोरे में ऊपर चाँदी के सिक्के थे और नीचे मिट्टी के ढेले थे। दूसरे बोरे में ऊपर मिट्टी के ढेले थे और नीचे चाँदी के सिक्के थे। बड़े पुत्र की समझ में न आया कि इस तरह बदलकर क्यों रखा गया है। इसलिए उसने चाँदी के सिक्के सब एक बोरे में डाल दिया, दूसरे में मिट्टी के ढेले भर दिये। दूसरे दिन अपने छोटे भाई से कहा–"भैया, पिताजी ने हम दोनों को एक-एक बोरा लेने को बताया है। मैं यह बोरा लेता हूँ, तुम दूसरा ले लो।" यह कहकर उसने चाँदी के सिक्कोंवाला बोरा ले लिया और मिट्टी के ढेलोंवाला बोरा छोटे को दिया।

छोटे भाई ने एकांत में यह सोचकर मिट्टी के ढेले को फोड़कर देखा कि इस बोरे में मिट्टी के ढेले क्यों हैं? उसमें सोने का सिक्का था। इस तरह छोटे को सोने के सिक्कोंवाला बोरा मिल गया।

सिंदबाद की अद्भुत यात्राएँ

चार बार समुद्री यात्राएँ करके अनेक कष्ट उठाने पर भी सिंदबाद ने हर यात्रा में अपार धन कमाया था। साथ ही अच्छा अनुभव भी प्राप्त किया। यह अनुभव उसके लिए बड़ा उपयोगी साबित हुआ। इसलिए घर पर बैठ कर कई सुख भोगते रहने पर भी उसका मन समुद्री यात्रा के लिए ललचाने लगा। इसलिए सिंदबाद ने पाँचवीं बार समुद्री यात्रा की तैयारी की। दूसरे देशों में अच्छे लाभ पर बिकने वाला माल खरीदा। बिक्री के लिए तैयार एक सुंदर जहाज़ को देख मुग्ध हुआ और उसे खरीद ही डाला। अच्छे अनुभवी मल्लाहों को तनख्वाह पर नियुक्त किया। तब अपने घर के नौकरों को साथ लेकर यात्रा के लिए तैयार हुआ। यह समाचार जान कर कुछ और व्यापारी यात्रा का खर्च पहले ही सिंदबाद को देकर उसके जहाज़ में रवाना हुए। इस बार सिंदबाद अपने निजी जहाज में यात्रा कर सका और साथ ही समुद्री यात्रा में काफ़ी अनुभव रखने के कारण वह मल्लाहों को उचित सलाहें देने की हालत में भी था।

बस्रा नगर पार करने के बाद यात्रा आराम से चली। हवा का रुख भी अनुकूल था। समुद्र भी शांत था। जहाँ भी जहाज लंगर डालता, वहाँ पर माल की अच्छी बिक्री हुई। इसलिए सब यात्री बड़े ही उत्साह के साथ आगे के कार्यक्रम पर विचार करने लगे।

इस बार जहाज़ एक निर्जन टापू में जा पहुँचा। वहाँ पर जहाज़ ने लंगर डाला। व्यापारी सब उस टापू को देखने गये। उन्हें एक जगह भेरुण्ड पक्षी का अण्डा दिखायी दिया। वे समझ न पाये कि वह

पाँचवी यात्रा

क्या चीज है। उन लोगों ने उस पर पत्थर फेंके। अण्डा फूट गया और पक्षी का पैर बाहर निकला। व्यापारियों ने पक्षी को बाहर निकाला, उसे टुकड़ों में काट कर बांट लिया और वापस जहाज़ पर चले आये।

सिंदबाद को जब यह खबर मालूम हुई, तब वह बहुत ही घबरा गया। उसने कहा–"तुम लोगों ने नाहक़ खतरा मोल लिया है। जब यह बात भेरुण्ड पक्षियों को मालूम हो जायगी, तब वे हमारा पीछा करके हमें मार डालेंगे। हमें यहाँ से जल्दी भाग जाना चाहिये।" इसके बाद सिंदबाद ने तुरंत जहाज़ के पाल उठंवाये और जहाज़ को खेने का मल्लाहों को आदेश दिया। यात्री सब डरे हुए थे। जल्दी वहाँ से सब लोग निकल भागना चाहते थे।

व्यापारियों ने पक्षी का मांस पकाया, मगर उनके खाने के पहले ही आसमान में सूरज को ढांपने वाले जैसे दो मेघ छा गये। वे वास्तव में मेघ न थे, बल्कि भेरुण्ड पक्षी थे। उनके पंखों की फड़-फड़ाहट और चिल्लाहटें ऐसी प्रतीत होती थीं, मानों मेघ गरज रहे हों। वे पक्षी सिंदबाद के जहाज़ के ऊपर उड़ रहे थे। उनके पैरों के नाखूनों के बीच दो भारी चट्टानें दीख रही थीं। वे चट्टानें जहाजों से भी बड़ी थीं। उन चट्टानों को देखते ही व्यापारियों के दिल कांप उठे।

देखते-देखते एक पक्षी ने अपने नाखूनों के बीच की चट्टान को सीधे जहाज़ पर छोड़ दिया। लेकिन मल्लाह ने बड़ी होशियारी से पतवार को घुमा कर जहाज़ को बचाया। वह चट्टान जहाज़ की बगल में समुद्र में जा गिरी। उस चट्टान के गिरने से समुद्र के

पानी में एक भारी खाई बनी और पल भर के लिए निचला तल्ला दिखायी दिया। उस समय जो ऊँची लहरें उठीं, जिसके कारण जहाज़ डगमगाने लगा। ऐसा लगता था कि मानों उन थपेड़ों से जहाज़ डूब ही जायगा।

इस बीच दूसरे पक्षी ने अपने पैरों के बीच से दूसरी चट्टान छोड़ दी। वह चट्टान सीधे जहाज़ पर जा गिरी। उसकी चोट से जहाज़ का आधा भाग चूर-चूर हो गया। चट्टान की चोट खाकर कुछ लोग उसी वक़्त मर गये। बाक़ी लोग समुद्र में डूब कर मर गये। सिंदबाद ने अपनी जान बचाने की सब तरह से कोशिश की। उसे लकड़ी का एक तख्ता मिला। उसकी मदद से तैरते वह बड़ी मुश्किल से एक टापू में जा पहुँचा। वहाँ पर बालू में थोड़ी देर तक सिंदबाद लेटा रहा, थकावट के दूर होने पर टापू को देखने चल पड़ा।

सिंदबाद को वह टापू स्वर्ग जैसा मालूम पड़ा। सब जगह फलों के पेड़ थे जो देखने में सुंदर लगते थे। पेड़ों पर रंग-बिरंगे पक्षी कलरव कर रहे थे। नीचे की ज़मीन तरह-तरह के फूलों के पौधों से कालीन जैसी दीख रही थी। फूलों से

सुगंधी फैल रही थी। सिंदबाद ने अपनी भूख मिटाने के ख्याल से फल तोड़कर खाये। झरने का मीठा पानी पिया। तब फूलों की कालीन पर लेट कर शाम तक सो गया।

जाग कर देखा, शाम होने को थी। वह टापू निर्जन था, इसलिए उसे अंधेरे को देख डर लगने लगा। उस रात को जैसे-तैसे वह सो गया, लेकिन वह रात-भर सपने देख रहा था। सवेरा होने पर वह इधर-उधर घूमकर देखने लगा।

थोड़ी देर बाद अचानक उसे एक आदमी दिखाई पड़ा। एक जगह एक गड्ढा था। उसमें पानी की एक धारा गिर रही थी। गड्ढे के किनारे पर एक आदमी बैठा था। वह बूढ़ा था। पत्तों से दुपट्टे जैसी चीज़ बनाकर उसे ओढ़े हुए था। सिंदबाद ने सोचा कि वह आदमी भी उसके जैसे जहाज़ से जान बचाकर निकल गया नाविक होगा।

सिंदबाद ने उसके निकट पहुँच कर पूछा—"क्यों जी, तुम यहाँ पर कैसे पहुँच गये?" बूढ़े ने चिंता प्रकट करते सर घुमा लिया और कुछ संकेत किये। उन संकेतों का मतलब था कि उसे भी उस प्रवाह को पार कर किनारे के पेड़ों से फल खाने की इच्छा है, अतः उसे पार लगा दें। वह भी असहाय है।

सिंदबाद ने उस बूढ़े की मदद करने का विचार करके झुक कर उसे अपने कंधों पर बिठा लिया। बूढ़े ने अपनी जांघों से सिंदबाद के कंठ को कस लिया और उसके सर को अपने दोनों हाथों से पकड़ लिया। सिंदबाद ने प्रवाह को पार करने के बाद थोड़ा झुक कर बूढ़े से कहा—"महाशय, हम धारा को पार कर चुके हैं। अब तुम सावधानी से उतर जाओ।"

लेकिन बूढ़े ने उतरने की कोशिश न की, बल्कि अपनी जांघों से सिंदबाद के गले को और कसकर पकड़ लिया। सिंदबाद बूढ़े के पैरों को देख कांप उठा। बूढ़े के पैरों में घने बाल इस तरह फैले थे, मानों सांड के पैर हों। बूढ़े को नीचे गिराने की सिंदबाद ने कोशिश की। लेकिन वह सफल न हो सका। बूढ़े ने सिंदबाद का कंठ इस तरह जोर लगाकर कस लिया कि उसका दम घुटने लगा। सिंदबाद की आँखों के सामने अंधेरा छा गया। वह बेहोश होकर नीचे गिर पड़ा।

होश में आने पर सिंदबाद ने देखा, बूढ़ा उसी तरह उसके कंधों पर बैठा है। मगर तब उसकी सांस चल रही थी। फिर भी जिंदा रहने की उसकी आशा जाती रही।

सिंदबाद को होश में आया देख बूढ़ा उसकी छाती पर पैरों से लात मारने लगा। फिर भी लाचार होकर सिंदबाद उठ खड़ा हुआ और धीरे से चलने लगा। बूढ़ा जब जब रुकने को कहता, तब रुक जाता और जब चलने का आदेश देता, तब सिंदबाद चल पड़ता। वरना उसे बूढ़े की लात खानी पड़ती। सिंदबाद की

हालत बड़ी बुरी थी। रात के वक्त जब सिंदबाद सोता, तब भी बूढ़ा उसके कंधों पर ही सवार रहता। बूढ़े की करनी से सिंदबाद को जो पीड़ा हुई और अपमान हुआ, उसका वर्णन करना नामुमकिन था।

सिंदबाद कई सप्ताहों तक बूढ़े को ढोता रहा। एक दिन उसे लौकी की बेल दिखायी दी। उस में एक लौकी सूखी पड़ी थी। सिंदबाद ने उसे तोड़कर गूदा निकाला। उस में अंगूर का रस भरकर उसे बंद किया। तब उसे धूप में सुखाया। कुछ दिन बाद वह खट्टा होकर शराब बन गया। इसके बाद सिंदबाद जब तब वह शराब पीता रहा। इस से उस में उत्साह और ताक़त भी आ गयी। बूढ़े ने देखा कि सिंदबाद में अचानक यह उत्साह कहाँ से आ गया? सिंदबाद को गाते, नाचते व उछल-कूद करते देख बूढ़े ने भी शराब मांगी। सिंदबाद ने डर के मारे शराब बूढ़े को भी दी। बूढ़े ने शराब को चखकर देखा, तब गटागट सारी शराब पी डाली। थोड़ी ही देर में वह नशे में आ गया।

बूढ़े के पैरों की पकड़ ढीली हो गयी। सिंदबाद ने उसके पैरों को खोल कर उसे नीचे ढकेल दिया। बूढ़ा गिरा-सा गिरा ही रह गया। सिंदबाद ने एक पत्थर लाकर बूढ़े के सर पर दे मारा। बूढ़ा ठण्ड़ा पड़ गया।

बूढ़े से पिंड छुड़ा कर सिंदबाद समुद्र के किनारे की ओर दौड़ा। किनारे पर एक जहाज़ और नाविक दिखाई पड़े। उसे लगा कि मानों वे लोग उसी को ले जाने के लिए आये हो। वास्तव में वे लोग पानी और फल की खोज में उस टापू पर उतर गये थे।

सिंदबाद के मुँह से बूढ़े की कहानी सुन कर यात्री सब अचरज में आ गये

और बोले–"तुम उस बूढ़े के जाल से बच निकले हो? उसने कई लोगों को मार डाला है! केवल तुम ही एक उसके चंगुल से बच आये हो!"

यात्रियों ने सिंदबाद को अपने साथ लिया। उसे पहनने के लिए कपड़े दिये। जहाज़ चल पड़ा। कई दिनों के बाद वह एक बंदरगाह में पहुँच गया। वह बहुत बड़ा शहर था। उसके चारों तरफ़ पेड़ों पर बड़ी तादाद में लंगूर थे। इसलिए उस शहर का नाम लंगूर नगर पड़ गया था। सिंदबाद ने जान लिया कि उस नगर में देश-विदेशों के व्यापारी आया करते हैं।

सिंदबाद की एक व्यापारी से दोस्ती हुई। वह उस व्यापारी के साथ शहर में गया। व्यापारी ने एक थैली में कंकड़ भर कर सिंदबाद के हाथ देते हुये कहा–"नगर के प्रवेश-द्वार को पार कर कई लोग पास की घाटी में जाते हुये तुम्हें दिखायी देंगे। तुम भी उनके साथ जाओ। वे लोग जो कुछ करें, तुम भी वही करो। इस से तुम्हारा लाभ होगा।"

सिंदबाद कंकड़ों से भरी थैली लेकर नगर के द्वार पर पहुँचा। बड़ी भीड़ को नगर से बाहर आते देख उन के साथ वह भी चल पड़ा। थोड़ी दूर चलने पर एक गहरी घाटी दिखायी दी। उसमें ऊँचे-ऊँचे पेड़ थे। सिंदबाद ने जान लिया कि वे नारियल के पेड़ हैं। उन पर नारियलों के साथ लंगूर भी बैठे हुये थे।

सब लोग पेड़ों के नीचे पहुँचकर अपनी थैलियों में से कंकड़ निकालकर लंगूरों को मारने लगे। लंगूर नारियल तोड़कर उन लोगों पर गिराने लगे। सब यात्री नारियल उठा उठाकर अपनी थैलियाँ भरने लगे। थैलियों के भरते ही वे लोग उन्हें अपने अपने कंधों पर डाल शहर की ओर चल पड़े।

सिंदबाद के लाये नारियलों को उसके मित्र ने ले लिया और उनका दाम सिंदबाद को दिया। सिंदबाद इस तरह रोज़ घाटी में जाता, नारियल लाकर अपने मित्र को बेचता। इस तरह जो रुपये मिले, उनसे व्यापार करने लगा। इस प्रकार उसने इतना धन कमाया जो मोतियों के टापू में पहुँचने के लिए पर्याप्त था।

मोतियों के टापू में जाते वक़्त सिंदबाद अपने साथ कई नारियल ले गया। यात्रा के दौरान में जो बंदरगाह पड़े, उनमें सिंदबाद ने नारियल बेचकर काली मिर्च, दालचीनी आदि ख़रीदा, कुछ और बंदरगाहों में उन्हें बेचकर खूब धन कमाया। यह धन उसे सीपी बटोरनेवालों की मज़दूरी देने के काम में आया।

सीपियों में बढ़िया मोतियों का मिलना केवल क़िस्मत की बात होती है। सिंदबाद की क़िस्मत खुल गयी थी, इसलिए उसने जो सीपियाँ ख़रीदी, उनमें से बढ़िया मोती निकले। उनको बेचने पर उसे अच्छा दाम मिला। जल्द ही उसके पास काफ़ी धन इकट्ठा हुआ। तब उसका मन घर लौटने को ललचाने लगा। उसने वापसी यात्रा के लिए आवश्यक सभी इंतजाम किये। रास्ते में पड़नेवाले बंदरगाहों में बेचने के लिए उसने मुसब्बर ख़रीदा। उन टापुओं में मुसब्बर बहुत ही सस्ता बिकता था।

उस माल को बेचते हुए सिंदबाद कई दिन बाद बस्त्रा होते हुए बगदाद पहुँच गया।

सिंदबाद को सकुशल वापस लौटे देख उसके बंधु व रिश्तेदार बहुत खुश हुए। इस यात्रा में उसे खूब फ़ायदा हुआ था, इसलिए सिंदबाद ने गरीबों में दान बांटे। फिर पूर्ववत् सुख भोग भोगते आराम से जिंदगी काटने लगा।

तीन कौड़ियाँ

एक नगर में चांग नामक एक तंबाकू का व्यापारी था। वह बहँगी में तंबाकू भरकर गली-कूचों में चिल्लाते उसे बेचा करता था। गलियों में भीड़ भरी होती थी, इसलिए बड़ी मेहनत के साथ घूम-फिरकर वह अपना पेशा करता था। वह कई सालों से यह व्यापार करता था। मगर उसका माल गली-कूचों में ज्यादा बिकता न था।

एक दिन सवेरे चांग बहँगी को कंधे पर डाल भीड़ को ढकेलते गलियों से होकर चला जा रहा था। तब चीथड़े पहने एक बूढ़े ने उसके कंधे पर थपथपाते पूछा—"सुनो भाई, मेरे हुक्के में क्या तुम तंबाकू भर दोगे?"

चांग ने बूढ़े की ओर देखा। बहँगी उतारना मुश्किल था। इसलिए वह ज्यों का त्यों खड़ा रह गया। चांग से बिना मोल भाव किये बूढ़े ने चांग को तीन कौड़ियाँ दिखायीं। वास्तव में हुक्के भर तंबाकू के लिए वह ज्यादा मूल्य ही था।

"अपना हुक्का आप ही भरो, दादा। बड़ा भारी बोझ है, मुझ से बहंगी उतारते नहीं बनता, बुरा न मानो।" चांग ने जवाब दिया।

बूढ़े ने अपने अंगूठे और अनामिका की मदद से तीन बार तंबाकू निकालकर हुक्के में भर दिया। चांग को इस बात का आश्चर्य हुआ कि उस छोटे से हुक्के में सारा तंबाकू कैसे समा गया। बूढ़े ने सारा तंबाकू जैसे तैसे हुक्के में भर दिया। बहंगी के पलड़े खाली हो चुके थे। यह सब देखकर भी चांग के मुँह से बात न निकली। धोखा खाकर मन ही मन पछताते हुए वह बूढ़े की तरफ़ देखता रह गया।

बूढ़े ने तंबाकू के बदले में तीन कौड़ियां चांग की बहँगी में डाल दी, तब हुक्का जलाकर भीड़ में ओझल हो गया। इस तरह लुटकर चांग पछताते हुए घर की ओर चल पड़ा।

रास्ते में उसे लगा कि बहँगी का बोझ बढ़ता जा रहा है। धीरे धीरे बोझ इतना बढ़ गया कि उसे ढोना चांग से संभव न था। इसलिए उसे लाचार होकर बहँगी को उतारना पड़ा।

बहँगी उतारकर देखता क्या है कि कौड़ियों से बहँगी के पलड़े भरे हुए हैं। चांग के देखते-देखते कौड़ियों की संख्या बढ़ती जा रही है। वह जैसे-तैसे चलते जल्द ही घर तक पहुँच गया।

देहली को पार करते हुए ठोकर खाकर चांग गिर पड़ा। तब सारी कौड़ियां बिखर गयीं। बड़ी मुश्किल से उसने सारी कौड़ियां जमा कीं और उन्हें एक लकड़ी की पेटी में भरकर ढक दिया।

इसके बाद उसने ठण्ड़ी सांस ली और सोचता रहा कि ये सारी कौड़ियां कहां से आ गयीं। इतने में पेटी के भीतर से खन् खन् की आवाज़ सुनाई देने लगी। चांग ने भीतर जाकर देखा तो पेटी का

ढक्कन खुला पड़ा था। पेटी में से उछलकर कौड़िय. नीचे गिर रही थीं और उनकी संख्या भी बराबर बढ़ती ही जा रही थी।

चांग नाक रगड़ते सोच में पड़ गया। आखिर उसने एक भारी हँड़ी लाकर उसमें कौड़ियाँ डाल दीं। पल भर में हँड़ी भी भर गयी। इस तरह शाम के अंदर तीन हँडियाँ भर गयीं। चांग दिन भर कौड़ियों को इकट्ठा कर हँड़ियों में भरता रहा। फिर भी कौड़ियों की संख्या भी बढ़ती जा रही थी।

चांग के पास इतना धन इकट्टा हुआ कि अब चांग की खुशी का ठिकाना न रहा। अब वह धनी था। उसे गली-कूचों में घूमकर तंबाकू बेचने की ज़रूरत न थी। उसने गिरवी का व्यापार करने का निश्चय किया। उसे दूकान में ठाठ से मसनद पर बैठे लोगों को क़र्ज़ देने के सिवाय दूसरा काम न था! वह क़िस्मत पर खुद चकित था।

चांग का व्यापार चमक उठा। आश्चर्य की बात तो यह थी कि इधर कौड़ियों की संख्या अब भी बढ़ती जा रही थी। हँड़ियों से जितना भी धन निकाले, फिर घटता न था।

एक दिन चांग की दूकान पर कोई बूढ़ा आया। उसने कुछ चीज़ें बेचनी चाहीं। वे चीज़ें क़ीमती भी न थीं। चांग ने उन चीजों को उलट-पलटकर देखा और पूछा–"इनका मूल्य तुम कितना चाहते हो?"

बूढ़े ने बिना संकोच के कहा–"मुझे सिर्फ़ तीन कौड़ियाँ दे दो।" चांग ने बूढ़े को तीन कौड़ियाँ दीं। बूढ़ा खुशी खुशी वहाँ से चला गया। उस दिन से चांग की हँड़ी में कौड़ियों का बढ़ना बंद हो गया।

बुद्धिमान

एक गाँव में एक किसान था। उसके सारंग नामक एक लड़का था। सारंग बड़ा बुद्धिमान था। उस पर उसके माता-पिता ही नहीं, बल्कि गाँव वाले तथा अध्यापक भी गर्व करते थे। सब ने सारंग के पिता को सलाह दी कि बालक सारंग को ऊँची शिक्षा दिलाने से वह योग्य व्यक्ति बन जायगा। उसके कारण गाँव का नाम भी फैल जायगा। इस पर सारंग के पिता ने उसे पढ़ाने का निश्चय किया और खर्च के लिए अपनी एक गाय बेच दी। और उस रक़म से सारंग को दूर के एक विद्यालय में पढ़ने भेज दिया।

एक साल बाद जब सारंग घर लौटा तो उसकी माँ ने कहा–"मेरे बेटे ने ज्यादा पढ़ लिया है। इसलिए दुबला हो गया है।"

सारंग के पिता ने पूछा–"बेटा, तुम क्या क्या पढ़ चुके हो?"

"पिताजी! मैं अब मेंडकों की बोली भी समझ सकता हूँ।" सारंग ने जवाब दिया।

"अरे, मेंडकों की बोली सीख आये हो? मैंने अपनी बढ़िया गाय बेचकर तुमको पढ़ने भेजा तो तुम यही सीख आये हो? ऐसी पढ़ाई किस काम की है? तुम घर रह कर खेती का काम करो।" पिता ने सारंग को डांटा।

सारंग ने खेत के काम में अपने पिता की मदद करते कुछ दिन बिताये। उसकी तबीयत भी सुधर गयी। एक दिन सारंग ने अपने पिता से फिर पढ़ने जाने की इच्छा प्रकट की। पिता ने साफ़ इनकार कर दिया। लेकिन सारंग की माँ ने अपने पति से झगड़ कर कहा–"मेरा बेटा सारंग पढ़-लिख कर सबसे होशियार कहलाया। क्या वह खेती का काम करते घर पर ही रह जायगा। यह मैं बिलकुल पसंद नहीं करती। इसे पढ़ाना ही चाहिये।"

कुमारी पुष्पा

पत्नी का विरोध सारंग का पिता न कर पाया। उसने फिर सारंग के हाथ रुपये देकर पढ़ने भेजा। कुछ दिन पढ़-लिख कर सारंग घर लौटा तो उसकी तबीयत बिगड़ चुकी थी।

"बेटा, इस बार ही तो सही, अच्छी शिक्षा हाथ लगी कि नहीं?" सारंग के पिता ने पूछा।

"क्यों नहीं पिताजी? मैं अब कुत्तों की बोली भी सीख आया हूँ।" सारंग ने जवाब दिया।

"अरे कमबख्त। मेंड़क और कुत्तों की बोली से क्या काम है? उससे हमें खाना कपड़ा थोड़े ही मिलेंगे? फिर से खेत का काम कर लो।" सारंग के पिता ने इस बार भी डांट बतायी।

कुछ दिन तक सारंग ने अपने पिता के साथ खेती के काम किये, तब फिर पढ़ने की इच्छा प्रकट की। सारंग की मदद से अच्छी फ़सल हुई थी। इसलिए उसके पिता ने इस बार भी रुपये देकर उसे पढ़ने भेज दिया।

तीसरी बार जब सारंग घर लौटा तो पिता ने पूछा–"इस बार ही सही, तुम अच्छे पंडित बन गये हो न?"

जी हाँ, पिताजी! अब मैं मछलियों की बोली भी सीख गया हूँ।" सारंग ने कहा।

"अब तुम अपनी पढ़ाई बंद करो। ये पढ़ाइयाँ ऐसे लोगों के लिए हैं जिनके पास फालतू पैसे होते हैं? तुम खेत का काम कर लो।" सारंग के पिता ने उसे समझाया।

सारंग अब पढ़ाई की बात भूल कर खेत का काम करने लगा। एक दिन सारंग खेत में मेंड़ बना रहा था। दो सज्जन उधर से आ निकले। सारंग को देख उन लोगों ने पूछा–"लड़के, हम दोनों

रामापुर जा रहे हैं। सुनते हैं कि वहाँ के राजा मंत्री चाहते हैं। हम अपनी क़िस्मत अजमाने के लिए जा रहे हैं। शायद हमें वह पद मिल जाय। क्या तुम हमारे साथ चलोगे?"

वे दोनों वास्तव में एक नौकर की खोज में थे। उन्हें सारंग बढ़िया नौकर जान पड़ा।

"आ तो सकता था, मगर मेरा काम बिगड़ जायगा।" सारंग ने जवाब दिया।

"अरे, तुम्हारा खर्च हम लोग उठायेंगे। उल्टे थोड़े रुपये भी देंगे। चलो हमारे साथ।" दोनों ने कहा। सारंग भी उनके साथ जाने को मान गया।

वे दोनों सारंग को साथ ले निकल पड़े। दुपहर के समय एक तालाब के पास बैठकर खाने लगे। उस वक़्त तालाब की ओर से सारंग को बातचीत सुनाई दी। उसने घूमकर देखा तो दो मेंडक दीख पड़े। एक मेंडक के हाथ में एक गोली थी। दूसरे मेंडक ने पूछा–"यह गोली कैसी?"

"यह तो बढ़िया दवा है।" पहले मेंड़क ने जवाब दिया।

"मैं यक़ीन नहीं कर सकता।" दूसरे मेंडक ने कहा।

"तुम यक़ीन न करोगे तो कुछ बनता-बिगड़ता नहीं। गाँव के मुखिये की माँ मरने की हालत में है, उसे यह गोली खिला दे तो वह पल भर में उठ बैठेगी।" पहले मेंड़क ने कहा।

"यह भी यक़ीन करने की बात है।" यह कहकर दूसरा मेंडक पानी में कूद पड़ा। पहला मेंडक गोली वहीं छोड़कर वह भी पानी में कूद पड़ा।

सारंग ने उस गोली को उठाकर जेब में डाल लिया।

वे तीनों खाने के बाद कुछ देर सो गये। सूरज के डूबते समय सब चल पड़े। गाँव में पहुँचते ही अंधेरा फैल गया।

तीनों ने उस रात को एक सराय में ठहरने का निश्चय किया। लेकिन सराय के मालिक ने कहा—"अब तुम लोग मुझे तंग न करो। मुखिये की माँ अब-तब में मरने वाली है। मुझे वैद्य को ढूंढ़ कर ले जाना है।"

"मैं भी वैद्य हूँ। मुझे मुखिये के घर ले जाइये।" सारंग ने कहा।

सराय के मालिक ने सारंग की ओर आश्चर्य के साथ देखा। फिर उसे मुखिये के घर ले गया। बूढ़ी बेहोशी में थी। सारंग ने अपनी जेब से गोली निकाल कर बूढ़ी के मुँह में डाल दी और पानी पिलाया। कुछ ही क्षणों में बूढ़ी ने आँखें खोल दीं। वैद्य ने बूढ़ी की नाड़ी देखकर कहा—"यह तो बच गयी। अब डर की कोई बात नहीं है।"

सारंग का बड़ा नाम हो गया। मुखिये ने उस दिन सब को बढ़िया भोज दिया। मुखिये को जब मालूम हुआ कि सारंग रामापुर जा रहा है, उसने रास्ते के पड़ावों पर ठहरने व खाने-पीने का उचित प्रबंध किया और उनके साथ अपने दो नौकरों को भी भेजा।

दूसरे दिन सब लोग फिर रवाना हुये। रात को गाँव की एक सराय में पहुँचे। सराय लोगों से खचाखच भरी पड़ी थी। मगर उन तीनों के ठहरने के लिए पहले ही इंतज़ाम किया गया था। भोजन करने के बाद वे तीनों एक कमरे में आराम करने पहुँचे। लेकिन उन्हें नींद न आयी। क्यों कि सराय के बाहर कुत्ते भूँक रहे थे।

"छी, छी, ये कमबख्त कुत्ते नींद हराम कर रहे हैं!" सारंग के साथ आये दोनों बुजुर्गों ने कहा।

"ऐसा न कहिये, ये कुत्ते हमारा बड़ा उपकार कर रहे हैं। कहते हैं कि आज रात को सराय में डाकू डाका डालेंगे। एक डाकू तो सराय में ही है। सुनते हैं कि आधी रात के वक़्त वह सराय के दर्वाज़े खोल कर डाकुओं को भीतर आने देगा।" सारंग ने समझाया।

"यह बात सच है?" दोनों बुज़ुर्गों ने पूछा।

"जानवर झूठ नहीं बोलते!" सारंग ने कहा।

सराय में ठहरे सभी यात्रियों को चेतावनी दी गयी। आधी रात के वक़्त सराय के मालिक ने दर्वाज़े खोल कर डाकुओं को अन्दर आने दिया। सब ने सोने का बहाना कर के डाकुओं को पकड़ लिया। उनके साथ सराय का मालिक भी रंगे हाथ पकड़ा गया।

दूसरे दिन सबेरे सारंग तथा दो बुज़ुर्ग फिर रवाना हुये। दुपहर तक वे एक झरने के पास पहुँच कर आराम करने लगे। उस वक़्त सारंग ने उन बुज़ुर्गों से कहा—"ये मछलियाँ हमारे बारे में बात-कर रही हैं।"

"क्या कहती हैं?" उन दोनों ने पूछा।

"कहती हैं कि हममें से कोई एक मंत्री बनने जा रहा है।" सारंग ने कहा।

दोनों बुज़ुर्ग बहुत खुश हुये। मानों उन दोनों को मंत्री बनने का मौक़ा बराबर हो। लेकिन उस दिन शाम को वे तीनों जब रामापुर पहुँचे, तब मंत्री का पद सारंग का इंतज़ार करता रहा। राजा को पहले ही ये बातें मालूम हो गयी थीं कि सारंग ने मुखिये की मां को बचाया और सराय में डाकुओं को पकड़ाया। इसलिए राजा ने सारंग को मंत्री बनाने का उसी समय निर्णय किया।

संतान पाने की इच्छा से द्रुपद मुनियों के आश्रमों में गये और उन्होंने एक पुत्र तथा एक पुत्री की कामना की। पुत्र की कामना इसलिए की कि वह द्रोण का वध करे और पुत्री अर्जुन की पत्नी बन सके। इस इच्छा को लेकर वे सभी आश्रमों का चक्कर लगाते हुए अंत में गंगा-यमुना के संगम पर स्थित एक आश्रम में पहुँचे। वहाँ पर याज और उपयाज नामक दो भाई थे। वे काश्यप गोत्र के थे। दिन-भर वेदों का पारायण करते वे लोग सूर्य की आराधना किया करते थे। उनमें उपयाज ही द्रुपद की दृष्टि में अधिक तपोबलवाला प्रतीत हुआ। इसलिए द्रुपद उसकी सेवा-शुश्रूषा करने लगा।

एक दिन एकांत में द्रुपद उपयाज के पैर दबा रहे थे, तब उन्होंने उपयाज से निवेदन किया–"मुनिवर, द्रोण ने मेरा अपमान किया। मैं तथा दूसरा कोई राजा भी उसको मारने की ताक़त नहीं रखते। इसलिए आप मुझपर ऐसा अनुग्रह कीजिये, जिससे द्रोणाचार्य का वध कर सकनेवाला पुत्र मुझे पैदा हो जाय। मैं आपको अनेक गायें तथा आप जो भी अन्य चीज़ें माँगे, वे सब दूँगा।"

इस पर उपयाज ने जवाब दिया–"मेरी कोई इच्छा नहीं है। अलावा इसके, मैं ऐसे कामों में कभी दूसरों की मदद नहीं दे सकता।" उपयाज ने द्रुपद की बातों का खण्डन किया।

१३. द्रुपद की संतान

एक गंदी जगह पर गिरे हुए फल को भी उन्होंने खा लिया है। हमारे गुरुकुल वास में रहते वक़्त भी शुचि व अशुचि का ख्याल किये बिना ही जिह्वा को जो अच्छा लगता, वही वे खा लेते थे।"

उपयाज की ये बातें सुनकर द्रुपद याज के आश्रम में गये। उन्हें प्रणाम किया। अस्सी हज़ार गायें भेंट देकर अपनी इच्छा प्रकट की।

याज ने द्रुपद की इच्छा पूरी करने की सम्मति दी। उसने उपयाज को अपनी सहायता के लिए नियुक्त कर आवश्यक सारी सामग्री का संचयन किया। तब 'पुत्रकामेष्टि' यज्ञ का प्रारंभ किया। याज ने होम करके हविस को हाथ में लिया। इसके बाद द्रुपद की पत्नी कोकिलादेवी को बुलाकर आदेश दिया— "तुम यह हविस ग्रहण करो। तुम्हारे गर्भ से एक पुत्र तथा एक पुत्री का जन्म होगा।"

इस पर कोकिलादेवी ने उत्तर दिया— "मुनिवर, मैं अशुचि हूँ। थोड़ा ठहर जाइये। मैं अभी स्नान कर लौटती हूँ।"

"मैं और मेरे भाई ने मिलकर जो हविस तैयार किया, क्या वह तुम्हारी इच्छा

फिर भी द्रुपद निराश न हुए। पहले से भी अधिक श्रद्धा भाव से वे उपयाज की सेवा करने लगे। एक वर्ष बीत गया। एक दिन उपयाज ने द्रुपद से कहा— "राजन्, आप मेरी सेवाएँ कर रहे हैं, मगर आपकी इच्छा अनुचित है। इसलिए उसकी पूर्ति में मैं आपकी सहायता नहीं कर सकता, फिर भी मैं आपको एक उपाय बताता हूँ। आप मेरे भाई याज के आश्रय में जाइये। उन्हें असंख्य गायें देने का लालच दीजिये। शायद वे आपकी इच्छा पूरी कर सके। वे पहले से भी लालची रहे हैं। एक बार इसी लालच में पड़कर

की पूर्ति किये बिना व्यर्थ जायगा? चाहे तो ग्रहण करो, नहीं तो छोड़ दो।" यह कहते याज ने हविस को आग में डाल दिया।

उस अग्नि-कुण्ड में से एक योद्धा एक हाथ में तलवार तथा दूसरे हाथ में धनुष धारण कर रथ पर आरूढ़ हो सिंहनाद करते निकला। उसके सर पर मणिमय मुकुट था। देखते-देखते वह कहीं चला गया।

इसके बाद उसी अग्नि-कुंड से एक तेजस्विनी नारी का उदय हुआ। इस प्रकार द्रुपद एक पुत्र और पुत्री को प्राप्त कर सका। यह घटना देख पांचालवासी परमानंदित हुए।

इस बीच में कोकिलादेवी नहा कर लौट आयी। उसने याज और उपयाज से प्रार्थना कर यह वर प्राप्त किया कि वह अग्नि-कुंड से जन्मे पुत्र व पुत्री की माता बन जाय।

ब्राह्मणों ने द्रुपद के पुत्र का धृष्टद्युम्न तथा पुत्री का कृष्णा नामकरण किया। पुत्री काले रंग की थी, इसलिए कृष्णा नाम उचित समझा गया। द्रुपद ने याज को असंख्य गायें दीं और ब्राह्मणों में अपार धन दान करके कांपिल्य नगर में लौट आया।

कुछ समय बीतने के बाद द्रुपद ने धृष्टद्युम्न को अस्त्र-विद्या सीखने के लिए द्रोण के पास भेजा। द्रोण ने यह सोचकर उस युवक को पूर्ण धनुर्विद्या सिखायी कि तिरस्कार करने पर उसका अपयश होगा।

द्रुपद की पुत्री दौपदी (कृष्णा) विवाह के योग्य हुई। प्रारंभ से ही द्रुपद का विचार था कि उस कन्या का विवाह अर्जुन के साथ ही करे। लेकिन उसे समाचार मिला कि पांडव लाख के घर में जल मरे हैं।

द्रुपद निराश हो गया। उसने अपने बंधु, मंत्री व पुरोहितों को बुलाकर उनकी सलाह मांगी।

उस समय द्रुपद के अत्यंत स्नेहपात्र एक पुरोहित ने राजा से कहा–"महाराज, मुझे लगता है कि पांडवों की कोई हानि नहीं हुई। कई शकुनों से ऐसा मालूम होता है कि वे सुखी हैं। तुम चिंता न करो। स्वयंवर की घोषणा करो। वे लोग ज़रूर आयेंगे। राजकन्याओं का स्वयंवर शास्त्र सम्मत ही है।"

स्वयंवर का निर्णय किया गया। साढ़े तीन महीनों की अवधि रखी गयी। उस स्वयंवर में तोड़ने के लिए एक भारी धनुष का प्रबंध किया गया। आसमान में घूमने वाले सोने का एक मत्स्य यंत्र बिठाया गया।

एकचक्रपुर में ब्राह्मण के घर आये हुए अतिथि ने पांडवों को ये सारी बातें बताकर कहा–"सभी देशों के राजा द्रौपदी के स्वयंवर में भाग लेने के लिए कांपिल्य नगर जा रहे हैं।"

पांडव यह समाचार सुनकर बड़े दुःखी हुए कि उनके गुरु द्रोणाचार्य को मारनेवाला व्यक्ति पैदा हो गया है। लेकिन यह सोचकर उन लोगों ने अपने मन को सांत्वना दी कि जो होना है, सो होकर ही रहेगा। उनके मन में भी द्रौपदी के स्वयंवर में भाग लेने की इच्छा थी। यह बात जानकर कुंतीदेवी ने युधिष्ठिर से कहा–"बेटा, हम बहुत दिनों से एकचक्रपुर में रहते आये हैं। कुछ दिन और बीत जायें तो शायद यहाँ पर हमें भिक्षा भी मिलना मुश्किल होगा। क्या हम लोग पांचाल देश में चले जायें! सुनते हैं कि वह देश बहुत ही समृद्ध है। देखने में कांपिल्य नगर सुंदर भी है। द्रुपद ब्राह्मणों का विशेष आदर भी करते हैं।"

युधिष्ठिर ने अपने भाइयों से परामर्श करके उनको मनवाया। मकान-मालिक ब्राह्मण से विदा लेकर पांडव एकचक्रपुर से निकल पड़े।

पांडव दिन-रात यात्रा करके एक दिन आधी रात के वक़्त गंगानदी के तट पर स्थित सोमश्रव नामक तीर्थ में पहुँचे। चारों ओर अंधेरा फैला हुआ था। सब से आगे अर्जुन एक जलती लकड़ी लिये चल रहा था। गंगानदी में स्नान करने के ख्याल से वे लोग नदी के पास जाने लगे। उस वक़्त अंगारपर्ण नामक एक गंधर्व अपनी पत्नियों के साथ जल-क्रीड़ाएँ कर रहा था। उसने मनुष्यों की आहट पाकर चेतावनी दी–"कौन इधर आ रहे हैं? दूर हट जाइये। चारों ओर फैला हुआ यह वन मेरा है। मैं अंगारपर्ण नामक गंधर्व हूँ। कुबेर का मित्र हूँ। अलावा इसके यह वक़्त यक्ष, राक्षस और गंधर्वों के संचार करने का है। मनुष्यों को इस समय चलना मना है।"

इस पर अर्जुन ने कहा–"दुष्ट! हिमालय प्रदेश और गंगानदी किस की संपत्ति नहीं हो सकती। ये सब की हैं। गंगाजी के दर्शन करते ही नहाना चाहिये। चाहे वह वक़्त आधी रात का हो या सवेरा हो! इसलिए हम लोग गंगाजी में नहाये बिना आगे नहीं बढ़ सकते।"

अर्जुन का जवाब सुनने पर अंगारपर्ण को क्रोध आया। उसने अर्जुन पर बाणों की वर्षा की। अर्जुन ने जलती लकड़ी से उन बाणों को रोकते हुए कहा–"अरे गंधर्व! तुम अपने दुर्बल बाणों से हमें डराना चाहते हो! हमें समझा ही क्या? तुम्हारी दाल हमारे सामने गलने की नहीं।" ये शब्द कहते अर्जुन ने मंत्र फूँककर आग्नेयास्त्र का प्रयोग किया। इससे गंधर्व का रथ जलकर राख हो गया। गंधर्व नीचे गिरकर बेहोश हो गया।

उस वक़्त गंधर्व की पत्नी कुंभीनसी ने युधिष्ठिर की शरण में आकर अपने पति को बचाने की प्रार्थना की। तब युधिष्ठिर ने अर्जुन से कहा–"अर्जुन, यह नारी हमारी शरण में आकर पति-भिक्षा माँग रही है। इसलिए तुम गंधर्व को प्राणों से छोड़ दो।"

अपने भाई का आदेश पाकर अर्जुन ने गंधर्व को छोड़ दिया।

गंधर्व होश में आकर अर्जुन से बोला–"मैं तुम्हारे हाथों में हार गया हूँ। इसलिए मैं अंगारपर्ण नाम त्याग देता हूँ। तुमने मेरा रथ जला डाला। उसकी जगह मैं एक विचित्र रथ की सृष्टि करूँगा और अपना नाम चित्ररथ रख लूँगा। तुम महान वीर हो। इसलिए मैं तुमको 'चाक्षुसी' नामक विद्या दूँगा। उसकी सहायता से तुम तीनों लोकों में कहाँ, कब, क्या होने जा रहा है, जान सकते हो। यह विद्या हमारे पास है। इसी वजह से देवता भी हमारी हानि नहीं कर पाते हैं। चाक्षुसी के साथ मैं तुमको कुछ दिव्य अस्त्र भी दूँगा। तुम्हारे सभी भाइयों को एक एक सौ घोड़े भी दूँगा।"

अर्जुन ने कहा–"मैं किसी से कुछ ग्रहण नहीं करता।"
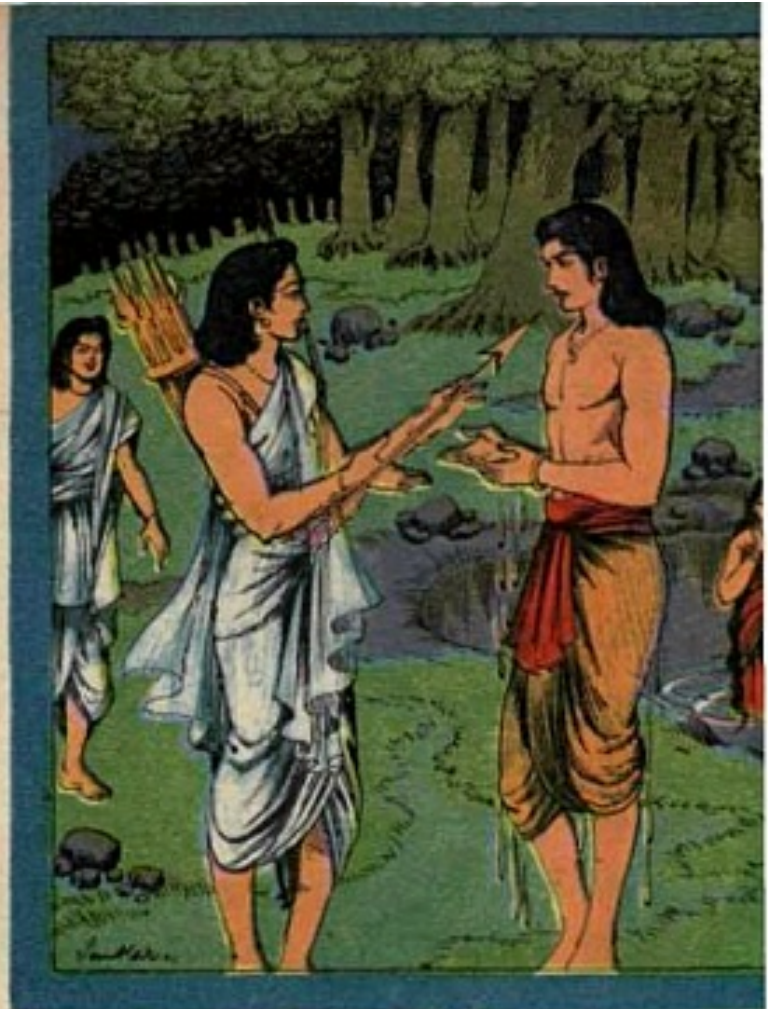
"तब तो तुम एक काम करो। मुझे कोई चीज़ दो और बदले में मुझसे उपहार लो।" गंधर्व ने समझाया।

गंधर्व को आग्नेयास्त्र देकर उसके बदले घोड़ों को लेने से अर्जुन मान गया।

अंत में गंधर्व ने अर्जुन को सलाह दी–"तुम लोग क्षत्रिय हो! इसलिए तुम अपने लिए एक पुरोहित का इंतज़ाम करो। उनकी सलाहों के अनुसार चलो। तभी तुम्हारा उपकार होगा।"

अर्जुन ने गंधर्व को मंत्र का उपदेश देकर आग्नेयास्त्र दिया और कहा–"फिलहाल तुम घोड़ों को अपने ही पास

रखो। ज़रूरत पड़ने पर मैं उन्हें मंगवा लूँगा।" इसके बाद पांडव गंधर्व से विदा लेकर आगे बढ़े।

गंगा तट से चलकर पांडव उत्कोच तीर्थ में पहुँचे। वहाँ पर धौम्य तपस्या कर रहा था। पांडवों ने उनको प्रणाम करके प्रार्थना की कि वह उनका पुरोहित बने। धौम्य ने पांडवों के पराक्रम, शक्ति, उत्साह आदि को भाँप लिया। उसने सोचा कि पांडव उसकी पुरोहिताई के योग्य हैं। इसके बाद उन्हें उचित आतिथ्य देकर उनकी इच्छा की पूर्ति करने की स्वीकृति दी। धौम्य के पुरोहित बनते ही पांडव ऐसा अनुभव करने लगे, मानों वे लोग सारे जगत के राजा बन बैठे हों।

उसी समय कुछ लोग द्रौपदी के स्वयंवर में भाग लेने कांपिल्य नगर में जाते हुए धौम्य के आश्रम में आये। उन्हें देख पांडवों ने यह इच्छा प्रकट की कि वे लोग अपनी माता और धौम्य के साथ स्वयंवर देख प्रसन्न होना चाहते हैं।

ब्राह्मण वेषधारी पांडवों को देख ब्राह्मणों ने उनसे पूछा–"आप लोग कहाँ से आये हैं? और कहाँ जा रहे हैं?"

"हम लोग एकचक्रपुर से कांपिल्य नगर जा रहे हैं।" युधिष्ठिर ने उत्तर दिया।

"हम लोग भी वहीं जा रहे हैं। वहाँ पर राजा द्रुपद की पुत्री का स्वयंवर होनेवाला है। सुनते हैं कि द्रौपदी बड़ी सुंदर है और स्वयंवर में भाग लेने अनेक राजा दूर दूर देशों से आ रहे हैं। स्वयंवर को देखने आनेवाले ब्राह्मणों को राजा द्रुपद गोदान, स्वर्ण दान, अन्न दान आदि करनेवाले हैं। चलिये, हम लोग भी उस उत्सव को देख लौट आयेंगे।" ब्राह्मणों ने कहा।

पांडव कुंती को साथ लेकर उन ब्राह्मणों के साथ दक्षिण पांचाल देश के कांपिल्य नगर के लिए रवाना हुए।
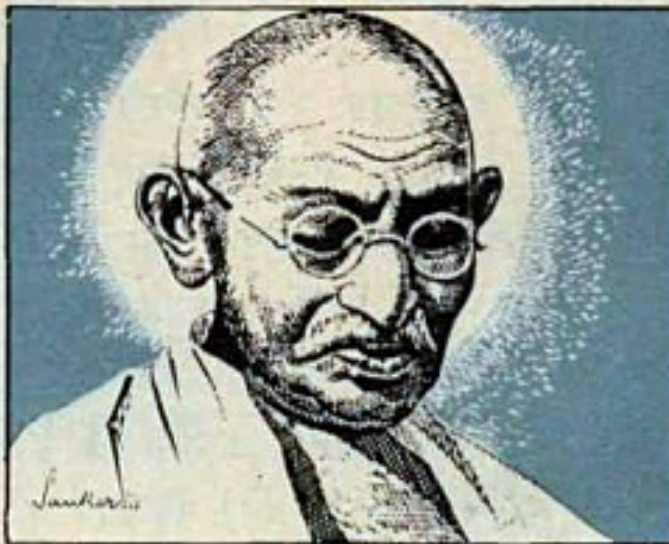
[१३]

१९३४ में क़ानून-भंगवाला आन्दोलन बंद हुआ। इसलिए सरकार ने कांग्रेस पर से रोक उठा दी। इसके बाद गांधीजी राजनैतिक कार्यों से दूर रहकर गाँवों के उद्धार में लग गये।

१९३७ में नया शासन-विधान अमल में आया। शासन-विधान के निर्णायकों ने कहा कि इस विधान के अनुसार भारत धीरे-धीरे शासन-सूत्र को अपने हाथ में लेगा।

कांग्रेस ने शासन के अधिकार को हाथ में लिया। इस वजह से कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच मतभेद उत्पन्न हुए। सरकार के साथ भी संघर्ष होने लगा। १९३९ में दूसरा महा युद्ध शुरू हुआ। तब कांग्रेस और ब्रिटीश शासकों के बीच बड़ी खाई उत्पन्न हुई।

महा युद्ध के शुरू होने के दस दिन बाद कांग्रेस ने कुछ प्रस्ताव पास किये। एक प्रस्ताव में कांग्रेस ने नाजियों के अत्याचारों के शिकार हुए लोगों के प्रति सहानुभूति प्रकट की। उसी में यह भी बताया गया कि ब्रिटीश सरकार प्रजातंत्र के प्रति अपने स्पष्ट विचार प्रकट करे, तभी भारतीयों का सहयोग उसे पूर्ण रूप से मिल सकता है। इसका मतलब था कि ब्रिटीशवाले युद्ध में भारत की सहायता चाहते हैं तो उन्हें भारतीयों को आज़ादी देनी होगी।

ब्रिटीशवाले भारतीयों को आज़ादी देने के लिए तैयार न थे, इसलिए कांग्रेसी नेता आन्दोलन चलाने के लिए तत्पर थे, मगर गांधीजी ने केवल व्यक्तिगत सत्याग्रह करने की ही अनुमति दी। १७ अक्तूबर १९४०

ब्रिटन के प्रधान मंत्री चर्चिल भारत के साथ समझौता करने के लिए तैयार हुए। इसका कारण जापान का भारत पर हमला था। सिंगपूर जब जापान के अधीन हुआ, उसके दस दिन बाद भारत की समस्या पर विचार करके उसे हल करने के निमित्त 'काबिनेट मिशन' की नियुक्ति हुई। भारत के साथ समझौता करने के लिए स्टाफर्ड क्रिप्स भारत में आया। उसके सुझाव भारत के बँटवारे के लिए अधिक सहायक हुए।

को व्यक्तिगत सत्याग्रह का आन्दोलन प्रारंभ हुआ। ढाई महीनों के अन्दर विभिन्न राज्यों की विधान सभाओं के ४०० कांग्रेसी सदस्य तथा २७ भूतपूर्व मंत्री जेल गये। १५ मई १९४१ तक २५,०६९ व्यक्ति जेलों में थे। लेकिन यह आन्दोलन शांति के साथ चला। इससे युद्ध की तैयारी में किसी प्रकार की अड़चन पैदा न हुई।

१९४१ में जापान ने महा युद्ध में भाग लिया। इस कारण युद्ध भारत की सीमा तक पहुंचा। कांग्रेसी क़ैदी जेलों से रिहा हुए।

१४ जुलाई १९४२ में वर्धा में कांग्रेस वर्किंग कमिटी की बैठक हुई। उसमें ब्रिटीशवालों को तुरंत भारत छोड़कर चले जाने का प्रस्ताव पास हुआ। अगस्त ७ को बंबई में आलिंडिया कांग्रेस की बैठक हुई। उसमें 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पास हुआ। ९ अगस्त के सवेरे गांधी, नेहरू, आज़ाद वगैरह कांग्रेस के प्रमुख नेता एक ही साथ गिरफ़्तार हुए। यह समाचार सुनते ही सारा भारत क्रोध से भर उठा। जनता आवेश में आ गयी। सारे देश में भयंकर आन्दोलन छिड़ा। सरकार ने बड़ी निर्दयता के साथ इस आन्दोलन को कुचल दिया।

इस बार जेल में गांधीजी के दो निकट सहचरों की मृत्यु हुई। वे थे, गांधीजी के सहायक महादेव देशाय और उनकी पत्नी कस्तूरबा गांधी। कस्तूरबा गांधी ने २२ फ़रवरी १९४४ को अपने पति की गोद में प्राण त्याग दिये। कस्तूरबा ने गांधीजी के साथ ६२ वर्ष तक गृहस्थी चलाकर उनके सुख-दुखों को बराबर बाँट लिया था। उसी साल ६ मई को सरकार ने गांधीजी को रिहा किया।

युद्ध के खतम होने पर ब्रिटीश सरकार भारत की समस्या को हल करने का संकल्प करने लगी। मगर यह समस्या बड़ी जटिल बन बैठी थी। ब्रिटीशवाले जिन्ना साहब को नाखुश करने को तैयार न थे। लार्ड वावेल ने नेहरूजी के नेतृत्व में मंत्रिमण्डल बनाने को सुझाया, लेकिन जिन्ना ने उसमें भाग लेने से साफ़ इनकार किया। १६ अगस्त १९४६ को मुस्लिम लीग ने उस निर्णय के प्रति अपना असंतोष प्रकट किया।

उसी दिन कलकत्ते में जो हत्याकांड शुरू हुआ, वह चार दिन तक चला। मृत्यु देवी ने कलकत्ते की गलियों में भयंकर कुहराम मचाया। उसमें पाँच हज़ार से ज़्यादा लोग मरे। १५ हज़ार लोग घायल हुए। बगाल पर शासन करनेवाली मुस्लिम लीग सरकार इस कांड को देखती रह गयी। पहले मुस्लिमों ने ही हिन्दुओं पर आक्रमण किया, लेकिन हिन्दुओं ने बाद को इसका प्रतिशोध लिया। इसके दो महीने बाद नआखाली जिले (पूर्वी बंगाल) में मुस्लिमों ने हिन्दुओं की बलि ली। गांधीजी अपने कार्यक्रम पर भी विचार किये बिना नआखाली चले गये। गांधीजी के जाने से पूर्वी बंगाल में थोड़ी बहुत शांति पैदा हो गयी।
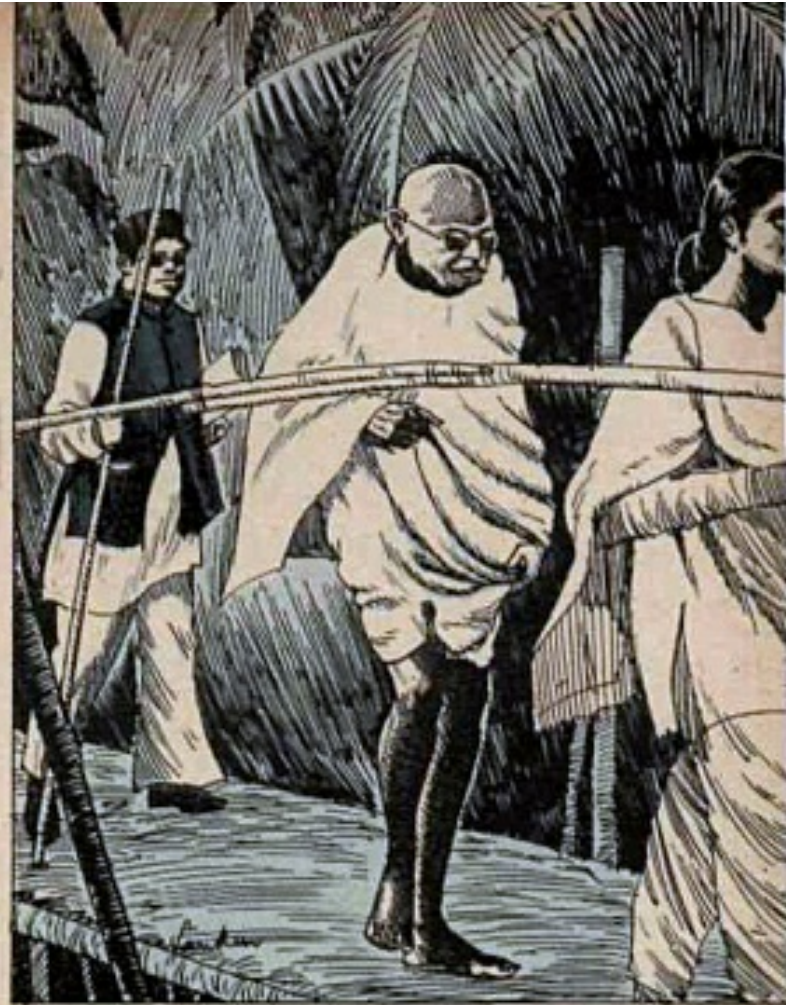
नआखाली की घटनाओं का जवाब बिहार ने दिया। बड़ी तादाद में मुस्लिमों

को हिन्दुओं ने मारा। २ मार्च १९४७ को गांधीजी बिहार गये। उन्होंने नआखाली के मुस्लिमों तथा बिहार के हिन्दुओं से अनुरोध किया कि बहुमत वाले लोग अल्पमत वालों की सहायता करे। १९४६-४७ में जो हिंसा-कांड हुए, उसका कारण गांधीजी की समझ में न आया। वे चाहते थे कि सारा संसार भारत से अहिंसा का पाठ सीखें। लेकिन स्वतंत्रता के साथ गृह युद्ध उलझा हुआ था।

इस गृह युद्ध को रोकने के लिए माउंट बाटन ने गांधीजी को सुझाया कि कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग दोनों मिलकर संयुक्त सरकारों को रद्द करे तथा जिन्ना के द्वारा राष्ट्रीय सरकार की स्थापना करावे। लेकिन जिन्ना ने जोर दिया कि देश का बंटवारा होना ही चाहिये। १५ अगस्त १९४७ में भारत और पाकिस्तान अलग अलग स्वतंत्र राष्ट्रों के रूप में अवतरित होने के लिए जून में ही निर्णय किया गया। देश के बंटवारे के लिए नेहरू, पटेल आदि कांग्रेस की वर्किंग कमिटी के सदस्यों ने स्वीकृति दी। मगर गांधीजी की अनुमति किसीने नहीं मांगी।

देश के बंटवारे के दिनों में गांधीजी ने स्वयं अपनी आँखों से देखा कि उनके सिद्धांत मिट्टी में मिलाये जा रहे हैं। ३१ अगस्त को जब वे बेलीघटा (बंगाल) में थे, तब हिन्दुओं ने उनके घर पर हमला करके उन पर पत्थर फेंकने का प्रयत्न किया। उन्हें चोट तो नहीं आयी, मगर शांति स्थापित करने के लिए उन्होंने जो प्रत्यन किये, वे बेकार हुए। आखिर एक हिन्दू के हाथों में उनकी मौत हुई। धार्मिक एकता के लिए गांधीजी ने जिंदगी-भर प्रयत्न किया, उसके पुरस्कार के रूप में उन्हें एक हिन्दू के हाथ के पिस्तौल की गोलियाँ प्राप्त हुईं। (समाप्त)

१००. यांत्रिक मानव

इस यंत्र को मास्को की सीमा पर स्थित येल्कोव शहर के युवा वैज्ञानिकों ने तैयार किया। इसके निर्माण का पर्यवेक्षण श्री वी. वी. मत्स्वेविच ने किया। यह एलेक्ट्रानिक उपकरणों से तैयार किया गया है। यह स्वयं अपना जन्मवृत्तांत बताता है। इसके बाद प्रश्नों का समाधान भी देता है। उसके "बोलते" समय उसके मुँह की कांति परिवर्तित होते हुए हममें ऐसा भ्रम पैदा करती है कि मानों उसके होंठ हिल रहे हों। वह चलता भी है। हाथ हिलाता है। संगीत की ताल पर नृत्य करते सर चालन करता है। वह हिसाब भी करता है। फिल हाल यह हिसाव के धन और जोड़ मात्र करता है।

Photo by Prasad

पुरस्कृत परिचयोक्ति

'निंदियाई आँखों में हैं सपने झलकें'.

प्रेषक :
विवेक शर्मा-दिल्ली

Photo by V. Thithu
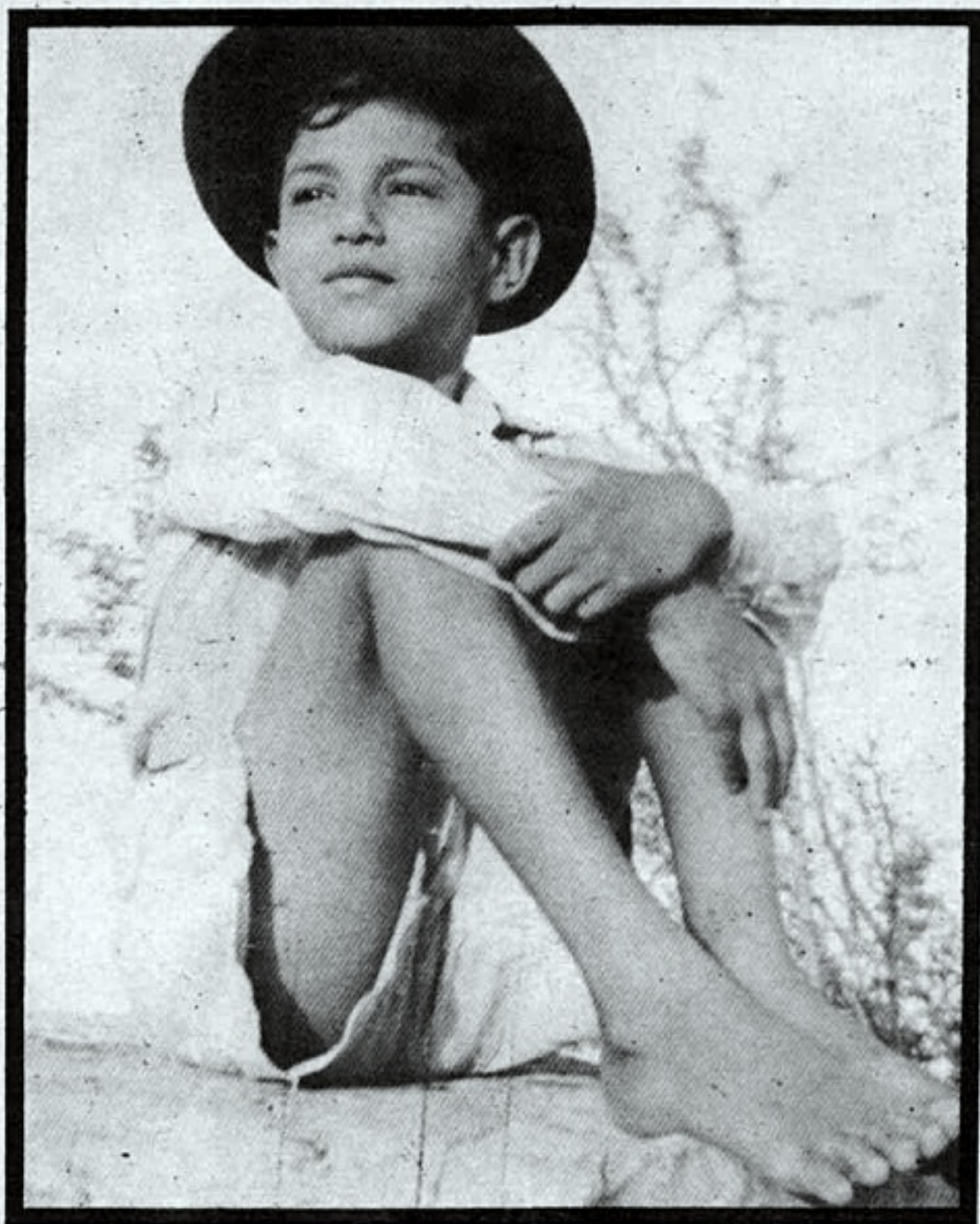
पुरस्कृत परिचयोक्ति

'न जाने किसकी प्रतीक्षा में हैं पलकें'

प्रेषक: विवेक शर्मा-दिल्ली

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता

जून १९७० :: पारितोषिक २०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिये। परिचयोक्तियाँ दो तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिखकर निम्नलिखित पते पर तारीख़ १० अप्रैल १९७० के अन्दर भेजनी चाहिये।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वड़पलनी, मद्रास २६

अप्रैल – प्रतियोगिता – फल

अप्रैल के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गयी हैं।

इनके प्रेषक को २० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो: **'निंदियाई आँखों में हैं सपने झलकें'**

दूसरा फ़ोटो: **'न जाने किसकी प्रतीक्षा में हैं पलकें'**

प्रेषक: **विवेक शर्मा,**

द्वारा जयप्रकाश शर्मा, हेच ८५–ए साउथ एक्स्टेन्शन–२ नई दिल्ली–१९

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

रस का
झरना फूटते
देखा
फैन्टा ऑरेंज
क्या कहने ...
जी चाहता है
प्यास लगे !

पालन पोषण सही कीजिए;
बच्चों को बोर्नविटा दीजिए!
बढ़ने और पढ़ने वाले बच्चों के लिए हर दिन के भोजन से मिलने वाली शक्ति काफ़ी नहीं होती। वे जितनी शक्ति रोज प्राप्त करते हैं उतनी पढ़ने और खेलकूद में खर्च कर डालते हैं। बच्चों में बराबर शक्ति बनाए रखने के लिए उन्हें हर दिन बोर्नविटा देना चाहिए। बोर्नविटा से बच्चे स्वस्थ तथा उत्साह पूर्ण रहते हैं।
स्वादिष्ट और पौष्टिक बोर्नविटा कोको, दूध, माल्ट और शक्कर का सन्तुलित मिश्रण है।
शक्ति, उत्साह और स्वाद के लिए— कैडबरिज बोर्नविटा!
Cadbury's
Bournvita
the ideal food drink for strength and vigour
450g
Bensons-O391 Hin

AWARDS!
WON PLENTY

PP

CHANDAMAMA (Hindi) APRIL 1970 Regd. No. M. 5452